ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

श्रावण २०७८ अगस्त २०२१

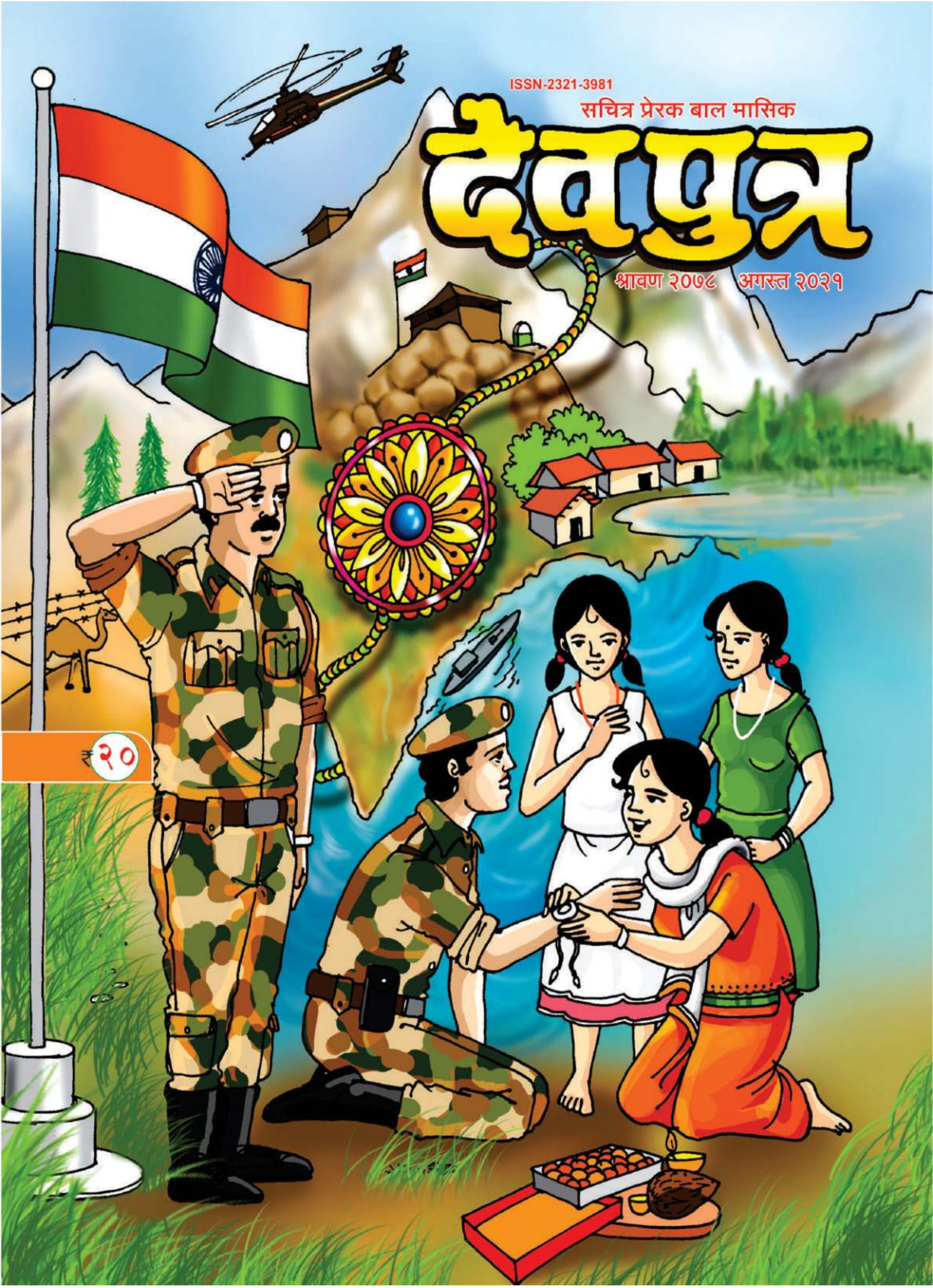

₹२०

कविता

हमारा प्यारा हिन्दुस्थान

– विष्णु गुप्त 'विजिगीषु'

हम भविष्य हैं, हम हैं भावी भारत की पहचान।
हम हैं हँसते सुमन यहाँ के, हम हैं हिन्दुस्थान।।
मातृभूमि के जिस कण–कण से
मिलता हमें दुलार।
जब तक जीवन, याद रहेगा
माँ का यह उपकार।।
मातृभूमि की रक्षा का है, हम पर भार महान।
हम भविष्य हैं, हम हैं भावी भारत की पहचान।।
उगते सूरज की किरणों सा
हम सबका जीवन है।
हम वह शीतल पवन, कि
जिससे आनन्दित मधुवन है।।
तिमिर विषमता का हरने को, हम हैं ज्योति अम्लान।
हम भविष्य हैं, हम हैं भावी भारत की पहचान।।
हम उस पथ के पथिक हैं जिस पर
चलती सदा मनुजता।
हम मनु की सन्तान हैं हमको
भाती नहीं दनुजता।।
हममें है आदर्श राम का, है राणा की शान।
हम भविष्य हैं, हम हैं भावी भारत की पहचान।।
भारत की गौरव गरिमा का
है जो बीज पुरातन।
हम फुलवारी आज उसी की
महकाते घर आँगन।।
अपनी ध्वनि में गूँज रहा है, अमर वेद का गान।
हम भविष्य हैं, हम हैं भावी भारत की पहचान।।

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र
(विद्या भारती से सम्बद्ध)

श्रावण	२०७८	वर्ष	४२
अगस्त	२०२१	अंक	२

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

आपने पुस्तकों में **'मेरे सपनों का भारत'** विषय पर निबंध अवश्य पढ़ा होगा। इस विषय पर बड़ा रोचक, सकारात्मक, उत्साहपूर्ण भाषण भी सुनने को मिल जाता है। उचित भी है, हर नागरिक का यह कर्त्तव्य है और अधिकार भी कि वह **'अपना देश कैसा हो'** इस विषय पर उत्कृष्ट कल्पनाएँ करे, स्वप्न संजोए, विचार करे।

एक दिन मैं 'अमर शहीदों के चारण' कहे जाने वाले महान राष्ट्रीय कवि **प्रा. श्रीकृष्ण 'सरल'** की रचनाएँ पढ़ रहा था। उनके एक गीत का मुखड़ा मुझे चिंतन की एक अलग भावभूमि पर ले गया। मुखड़ा था- **'देश के सपनों में तुम ढलो'।**

मैं इसके भाव पर चिंतन-मनन करने लगा तो विचार आया सचमुच हमारा राष्ट्र तो हमारी माँ है, एक जीवंत इकाई। हम एक चैतन्यपूर्ण मातृशक्ति के रूप में **'भारत माता'** की आराधना करते हैं। तब तो हम स्वप्न देखें उसके पूर्व से ही माँ ने हमारे लिए कई स्वप्न सजा रखे होंगे। सरल जी देश के सपनों में ढलने की बात कहते हैं। हमें देश की अपेक्षाओं के अनुकूल अपने आपको तैयार करना है। हम अपना निर्माण अपने जीवन के लिए नहीं, अपने जीवन का निर्माण राष्ट्र के जीवन के लिए कर सकें यह समुचित अपेक्षा है। माँ का अपनी संतानों के लिए देखा गया स्वप्न, संतान के स्वयं के लिए देखे गए स्वप्नों से कहीं अधिक सुन्दर व मंगलमय होता है।

देश के सपनों में स्वयं को ढालने के लिए देश के सपनों को समझना होगा। हमारे राष्ट्र की वास्तविक आवश्यकताएँ क्या हैं उन्हें जानकर, उनकी पूर्ति के लिए हम अपने आपको विकसित करें यही उत्तम राष्ट्रभक्ति होगी। हमारी देश से अपेक्षाएँ, तो माँ से संतान की अपेक्षाओं के जैसी हैं जिन्हें प्राय: माँ स्वयं समझकर पूरा कर देती है। लेकिन उस ममतामयी माँ की हमसे अपेक्षाएँ प्राय: अनकही होती हैं। हमें उन्हें स्वयं समझना होता है। हमारी भारतमाता भी स्वस्थ, सबल, सक्षम एवं सानंद रहे इस हेतु हम भारतवासियों को उसके स्वप्न उसकी आकांक्षाएँ, अपेक्षाएँ, आवश्यकताएँ हमें समझना होंगी तभी हम इस राष्ट्र के सपूत कहलाएँगें।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

॥ अनुक्रमणिका ॥

नाटक

- बलिदान के इतिहास का... -सुशील 'सरित' ०६

कहानी

- प्राण पद्म से अर्चना -गोपाल माहेश्वरी ११
- गप्पू जीत गया -बलदाऊ राम साहू १६
- राखी का चमत्कार -डॉ. सेवा नंदवाल २०
- चिप्पियाँ -निश्चल २६
- दोस्ती -अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन' ३०
- पक्का वादा दादी -नीलम राकेश ३४
- घास की आत्मकथा -रामगोपाल 'राही' ३८
- किससे सीखा है? -पवित्रा अग्रवाल ४२
- कर्म का महत्व -डॉ. अशोक ४८

छोटी कहानी

- असली जीत -सीताराम गुप्ता २३
- ढीट धूप -नीलू सोनी ३७

प्रसंग

- क्रांतिकारियों के प्रेरणास्रोत..-अभय मराठे १३
- मातृभूमि की गोद में -ऋषिमोहन श्रीवास्तव १८
- पथिक जी की राखी -शिवकुमार गोयल २१
- ऊर्जावान बलिदानी खुदीराम -सांवलाराम नामा २२

कविता

- हमारा प्यारा हिन्दुस्थान -विष्णु गुप्त 'विजिगीषु' ०२
- वह है भारतवर्ष हमारा -डॉ. मधुसूदन साहा ०५
- तुलसी बाबा -प्रा. श्रीकृष्ण 'सरल' ४०
- दादी ने दिमाग दौड़ाया -रावेन्द्र कुमार 'रवि' ४१
- नाचूँ, गाऊँ, शोर मचाऊँ -श्याम पलट पाण्डेय ४५
- दाऊ और कन्हैया -शिवचरण चौहान ५०
- इसलिए शपथ लो तुम -पं. नंदकिशोर 'निर्झर' ५१

स्तंभ

- यह देश है वीर जवानों का-२० १४
- छः अंगुल मुस्कान १४
- आओ ऐसे बनें -मदनगोपाल सिंघल १५
- संस्कृति प्रश्नमाला १८
- आपकी पाती २२
- विषय एक कल्पना अनेक:रक्षाबंधन
  - रक्षा बंधन का त्यौहार - भानुप्रताप सिंह २८
  - रक्षाबंधन -डॉ. हरीश निगम २८
  - बहिना की पाती -इन्द्रजीत कौशिक २९
- बड़े लोगों के हास्य प्रसंग ३६
- पुस्तक परिचय ४६

चित्रकथा

- डॉक्टर की फीस -देवांशु वत्स १९
- एक मिनिट -संकेत गोस्वामी २४
- जैसा आप कहें -संकेत गोस्वामी ३३
- राम की बहिनें -देवांशु वत्स ४७

बाल प्रस्तुति

- पत्ते की आत्मकथा -हिति चौधरी ५०

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।

विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** **चालू खाता (Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - **''मन्दसौर संजीत मार्ग SSM''** आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

वह है भारतवर्ष हमारा

– डॉ. मधुसूदन साहा

सदियों से जो स्वस्थ रहा है
जिसको सब कंठस्थ रहा है
हरदम न्याय–नीति की धारा–
वह है भारतवर्ष हमारा।

जहाँ प्रेम की बहती गंगा
लहराता हो जहाँ तिरंगा
जो सिखलाता भाईचारा–
वह है भारतवर्ष हमारा।

जहाँ पेड़ की पूजा होती
प्राणवायु हरियाली ढोती
सूरज बन जाता हरकारा–
वह है भारतवर्ष हमारा।

जहाँ परिन्दे पर फैलाकर
धूप सेकते नभ पर जाकर
जहाँ स्वच्छ हो अंबर सारा–
वह है भारतवर्ष हमारा।

जो सबका विश्वस्त रहा है
जिससे सब आश्वस्त रहा है
जो सबको देता उजियारा–
वह है भारतवर्ष हमारा।

– राउरकेला (ओडिशा)

बलिदान के इतिहास का एक अनछुआ पृष्ठ

– सुशील 'सरित'

उद्घोषक – शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले, वतन पर मिटनेवालों का यही बाकी निशां होगा, लेकिन बलिदान के इतिहास के कुछ ऐसे अनछुए पृष्ठ भी हैं, जो विस्मृति के आकाश में खो गये हैं ऐसे ही एक पृष्ठ पर लिखा हुआ नाम है, बंगाल की प्रीतिलता का। प्रीति जो सत्रह वर्ष की आयु में अपने वतन पर शहीद हो गई।

प्रथम दृश्य

(स्वाधीनता से पूर्व का काल विद्यालय के एक कमरे से बच्चों के धीरे–धीरे बोलने के स्वर कक्षा का आभास दे रहे हैं। मास्टर जी के आते ही कक्षा से उठ रहीं खुसुर–पुसुर जैसी आवाजें स्वत: शान्त हो जाती हैं।)

सभी बच्चे– नमस्ते मास्टर जी!

मास्टर जी– नमस्ते! बैठ जाओ (सबके बैठने का स्वर) हाँ तो कल मैं तुम्हें अंग्रेजों के विषय में बता रहा था, प्रीति! खड़ी हो जाओ और मेरा कल का पाठ दुहराओ।

प्रीति– कल आपने बताया था कि अंग्रेज हमें सिखाते हैं कि ईश्वर और सम्राट के प्रति वफादार रहो, लेकिन यह पाठ गलत है मास्टर जी!

मास्टर जी– (आश्चर्य से) अंग्रेज हमारे शासक है, उनके कारण देश में शांति बनी हुई है, वे भला गलत कैसे हो सकते हैं?

प्रीति– मेरी माँ कहती है कि अंग्रेज लुटेरे हैं, उन्होंने हमारे देश पर जबरदस्ती कब्जा कर रखा है। हमें अपने देश और ईश्वर के प्रति वफादार रहना चाहिए।

मास्टर जी– ये तू अभी नहीं समझ पायेगी बेटी (घंटी बजने के स्वर से कालांश समाप्त होने का संकेत मिलता है।) अच्छा बच्चो! कल ठीक से पाठ याद कर के आना (मास्टर जी के जाने का आभास उनके दूर होते पदचाप एवं छड़ी की ठक–ठक से मिलता है बच्चों की कानाफूसी फिर शुरू हो जाती है।)

एक लड़की– आज तो तूने मास्टर जी की ही बोलती बन्द कर दी प्रीति!

प्रीति– मैंने तो केवल सत्य कहा था सुनन्दा!

सुनन्दा– तेरी बड़ी–बड़ी बातें तो मेरी समझ में नहीं आतीं, लेकिन जब तू बोलती है तो बड़ा अच्छा लगता है। अच्छा बता तू बड़ी हो कर भला क्या बनना चाहती है?

प्रीति– मेरा सपना बचपन से ही एक महान वैज्ञानिक बनने का है लेकिन...

सुनन्दा– लेकिन क्या?

प्रीति– लेकिन जब से माँ से महारानी लक्ष्मीबाई की कहानी सुनी है तब से मन में हूक उठती है कि मैं उनके समय में क्यों नहीं हुई?

सुनन्दा– होती तो भला क्या करती?

प्रीति– यह तो ज्ञात नहीं।

(धीरे–धीरे बच्चों की कानाफूसी जैसा स्वर कम होते–होते शान्त हो जाता है।)

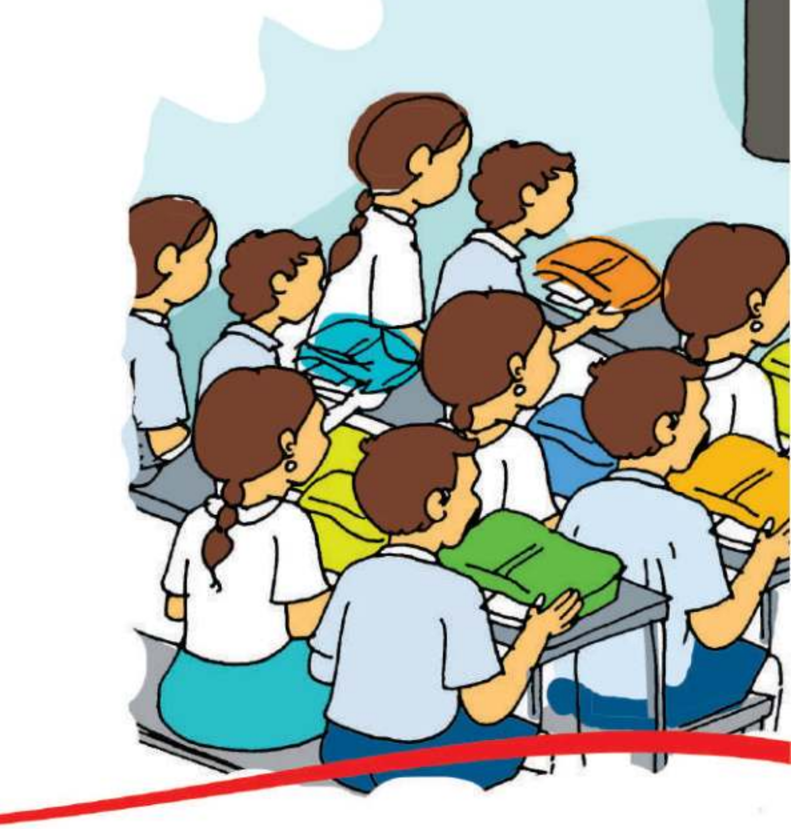

दूसरा दृश्य

(नदी की लहरों का स्वर ये संकेत दे रहा है कि स्थान किसी नदी का किनारा है, कहीं दूर से मंदिर के घंटों की आवाज भी आ रही है।)

सूर्यसेन– मुझे तुम पर गर्व है प्रीति! आज से छः माह पूर्व, जब मेरे साथियों ने तुम्हें दल में लेने की सलाह दी थी तब मुझे तुम्हारी आयु को लेकर शंका हुई थी कि भला सोलह–सत्रह वर्ष की किशोरी क्या करेगी? क्यों दत्ता?

दूसरा साथी– (दत्ता) हाँ दादा! मुझे याद है, आपने कहा था कि कहीं हमें ही उस किशोरी की रक्षा न करनी पड़े लेकिन....

सूर्यसेन– लेकिन तुम हर कसौटी पर खरी उतरीं प्रीति, रामकृष्ण विश्वास से चालीस बार जेल में मिलकर तुमने यह सिद्ध कर दिया कि तुम में एक सच्चे क्रान्तिकारी की सारी योग्यताएँ हैं।

तीसरा साथी– दादा! २२ मई का वह दृश्य जब भी याद करता हूँ, तो आज भी झुरझुरी आ जाती है।

प्रीति– अरे छोड़िये, ये सब तो दादा के आशीर्वाद से अपने आप ही आ गया है।

सूर्यसेन– नहीं प्रीति! बालाघाट का वह मकान जहाँ दीवारों में आज भी पुलिस और तुम्हारी चलाई गई गोलियों के निशान उपस्थित हैं, तुम्हारी बहादुरी का साक्ष्य है।

प्रीति– किन्तु (दुःखभरी ठण्डी सांस लेते हुए) निर्मल दादा के शहीद होने का मुझे सदा दुःख रहेगा।

सूर्यसेन– (दार्शनिक अंदाज में) क्रान्ति एक सतत् प्रक्रिया है प्रीति, जो केवल और केवल शहादत से संचालित होती है। यह प्रक्रिया तो तब तक चलनी है जब तक माँ के पैरों से बेड़ियाँ नहीं कट जातीं।

एक साथी– किन्तु अब करना क्या है दादा!

सूर्यसेन– कोई ऐसा कार्य जो अंग्रेजों की रातों की नींद हराम कर दे, उनके आत्मविश्वास को नष्ट कर डाले, उनको यह अनुभव करा दे कि वे अधिक समय तक भारत में नहीं टिक सकते।

एक साथी– दादा! इस संबंध में मेरा एक सुझाव है।

सूर्यसेन– मैं सुनने को उत्सुक हूँ।

साथी– पहाड़ी तला के समीप यूरोपियन क्लब आपने देखा है?

सूर्यसेन– हाँ! हाँ! खूब देखा है।

दूसरा साथी– मैंने भी देखा है दादा! दिन ढलने के बाद बंगाल में ही पेरिस के दर्शन होने लगते हैं।

साथी– हाँ, अगर उस पर हमला कर, उसे तहस–नहस कर दिया जाये तो अंग्रेजों को दिन में तारे दिखाई देंगे।

प्रीति– (उत्साह भरे स्वर में) यह तो सचमुच महत्वपूर्ण विचार है दादा! अंग्रेज लोग इन्हीं से काबू में आ सकते हैं।

एक साथी– इसमें भरपूर संकट है दादा!

प्रीति– संकटों से डरने वाला क्रान्ति की मशाल लेकर नहीं चल सकता।

सूर्यसेन– संकट तो मोल लेना ही पड़ेगा साथियों और...

साथी– और क्या दादा?

सूर्यसेन– और इस अभियान की बागडोर प्रीति के हाथ में रहेगी।

चारों साथी– (आश्चर्य भरे स्वर में) प्रीति.....?

सूर्यसेन– क्यों प्रीति! तुम्हें स्वीकार है?

प्रीति– (दृढ़ स्वर में) यह मेरा सौभाग्य होगा दादा।

सूर्यसेन– सोच लो प्रीति! पकड़ी भी जा सकती हो, और पकड़े जाने के बाद पुलिस द्वारा अपमानित होना भी तुम्हारी नियति बन सकता है।

प्रीति– ऐसा क्षण आने पर मुझे क्या करना है, यह मैं जानती हूँ।

सूर्यसेन– तो ठीक है प्रीति! यह कागज देखो इसमें सारी योजना मैंने लिख दी है।

एक साथी– तो क्या दादा आपने पहले से यह योजना पहले से बना रखी थी।

सूर्यसेन– नहीं, लेकिन, कुछ सामान्य कार्य योजना हम पहले से ही तैयार रखते हैं। यह उन्हीं में से एक है, हाँ एक सावधानी रखनी है।

एक साथी– वह क्या?

चौथा स्वर– हाँ दादा! लाठी चलाना हो या तलवारबाजी, इस छोटी सी आयु में भी वह दस–दस पर भारी बैठती है।

पहला स्वर– बाबू बता रहा था कि डॉयरेक्टर ऑफ पब्लिक इन्सट्रक्शन के एक सरकुलर (परिपत्र) के विरोध में खास्तौर विद्यालय के सामने उसने वो पिकेटिंग (धरना) की...

दूसरा स्वर– कि सारा चटगाँव हिल गया।

सूर्यसेन– अच्छा! अच्छा भाई मैं समझ गया। किन्तु तुम जानते हो कि चटगाँव शस्त्रागार काण्ड के बाद सरकार ने क्रान्तिकारियों को बिलकुल ही नष्ट करने पर कमर कस ली है।

चौथा स्वर– तभी तो, तभी तो दादा! मैं कहता हूँ कि एक लड़की अगर हमारी साथी होगी तो हमारा काम बहुत आसान हो जायेगा।

सूर्यसेन– ठीक है, तुम लोगों की यदि यही राय है तो, उसे अपने दल में ले लो। **(संगीत अन्तराल)**

तीसरा दृश्य

(पूर्व दृश्य, नदी की लहरों की कल–कल अभी भी स्पष्ट सुनाई दे रही है। सूर्यसेन के व्यग्रता के साथ टहलने का संकेत उनकी पदचाप के स्वर दे रहे हैं।)

सूर्यसेन– (स्वत:) आठ बजने वाले हैं अब तक तो सबको आ जाना चाहिये था।

(कहीं पास से मंदिर के घंटे बजने की आवाज आती है।) पता नहीं पैसों की व्यवस्था हुई भी या नहीं।

(किसी के सावधानी पूर्वक चलकर आने का स्वर) **आगन्तुक–** जय हिन्द, दादा!

सूर्यसेन– जय हिन्द, क्या बात है बहुत देर हो गयी।

आगन्तुक– दो आदमियों को शंका हो गई थी दादा। बड़ी कठिनाई से झाँसा देकर आया हूँ। प्रीति नहीं आई (किसी के लगभग भाग कर आने का स्वर)

सूर्यसेन– लो प्रीति भी आ गई।

प्रीति– (हाँफते हुए) जय हिन्द दादा! (इसी बीच दो अन्य साथियों के आने का स्वर)

दोनों आगन्तुक– जय हिन्द दादा!

सूर्यसेन– जय हिन्द, तुम सभी के लिये चिंता हो रही थी।

पहला साथी– चिन्ता और वह भी आपको?

सूर्यसेन– चटगाँव केस में अनन्तसिंह को खोकर मैं स्वयं को कुछ कमजोर अनुभव करने लगा हूँ।

दूसरा साथी– ये बात तो है दादा! अनन्त सिंह जैसा दूसरा साथी मिलना कठिन है।

तीसरा साथी– अनन्त सिंह, आगरा का शेर था, जिसे चटगाँव की क्रूर धरती चट कर गई।

प्रीति– अनन्त सिंह की शहादत तो हम सबकी प्रेरणा–स्रोत है साथियो! लेकिन दादा! आपको हमारी ओर से न तो चिन्तित होने की आवश्यकता है और न ही स्वयं को कमजोर अनुभव करने की।

पहला साथी– अपने रक्त से माँ का तिलक करने को हममें से हर एक उतावला है दादा!

सूर्यसेन– मैं तुम सबकी भावनाओं को समझता हूँ साथियो! अच्छा, पैसे की व्यवस्था हो गई? कल तक बनर्जी को पहुँचाने हैं।

पहला साथी– हम लोगों ने चार सौ पचास रुपये तो कल ही इकट्ठा कर लिये थे लेकिन...

प्रीति– लेकिन का भी कोई स्थान है दादा! बाकी के पचास रुपये मैं ले आई हूँ।

सूर्यसेन– चलो यह समस्या तो हल हो गई, किन्तु प्रीति मैं तुमसे अवश्य पूछना चाहूँगा कि यह पचास रुपये तुमने कहाँ से इकट्ठा किये?

प्रीति– छोड़िये दादा!

सूर्यसेन– नहीं प्रीति! हम क्रान्तिकारी साथी एक–दूसरे से कुछ भी छुपाना पाप समझते हैं।

प्रीति– ये मेरे पिताजी का पूरा वेतन है, और दादा! ना मत कीजियेगा, मेरे पिताजी मुझ पर पूरा विश्वास करते हैं।

सूर्यसेन– आप आठ साथी दो–दो की टुकड़ी में अलग–अलग जाएँगे और प्रीति सबसे अलग जायेगी। अपनी–अपनी घड़ियाँ मिला लें। ठीक ८ बजे आपको हमला करना है। ठीक है!

सभी साथी– ठीक है।

सूर्यसेन– तो आओ हर अभियान का प्रारम्भ जिस शपथ से होता है उसे दुहरायें। दत्ता व कोने में जो दीपक जल रहा है उसे लेकर आओ।

(दत्ता के जाने की आहट और लौटने का स्वर)

सूर्यसेन– नित्य की तरह जलते हुए दीपक की लौ पर हाथ रखकर सभी साथी शपथ को दुहरायेंगे, तैयार?

सारे साथी– (समवेत् स्वर में) तैयार।

सारे साथी– हम शपथ लेते हैं।

सूर्यसेन– कि इस अभियान में।

सारे साथी– कि इस अभियान में।

सूर्यसेन– अपने रक्त की अंतिम बूँद तक

सारे साथी– अपने रक्त की अंतिम बूँद तक

सूर्यसेन– प्रीति के नेतृत्व में आस्था रखते हुए

सारे साथी– प्रीति के नेतृत्व में आस्था रखते हुए

सूर्यसेन– संघर्ष करते हुए विजय प्राप्त करेंगे अथवा अपने प्राण दे देंगे।

सारे साथी– संघर्ष करते हुए विजय प्राप्त करेंगे अथवा अपने प्राण दे देंगे

सूर्यसेन– जयहिन्द।

सारे साथी– जयहिन्द।

(जय हिन्द के नारे के तीन बार दुहराये जाने के साथ ही संगीत अन्तराल)

चौथा दृश्य

(वेस्टर्न बाल डान्स संगीत की धुन वातावरण में उभर रही हैं। क्लब का संकेत देने वाले अन्य स्वर भी सुनाई दे रहे हैं।)

प्रीति– (स्वत:) आठ बजने में केवल ७ मिनट बाकी है, योजना के अनुसार आठों साथियों को आस–पास ही होना चाहिये।

(मद्धम–मद्धम ८ सीटी के स्वर अलग–अलग दिशा से सुनाई पड़ते हैं।)

(स्वत:) वाह! समय का अनुशासन तो कोई हम क्रांतिकारियों से सीखे, ८ बजने में बस दो मिनट बाकी हैं (सीटी विशेष प्रकार में दो बार बजाकर गरजदार स्वर में) सावधान! सारा भारत भूख, बेकारी, गरीबी और तुम्हारे अत्याचारों से कराह रहा है और तुम, तुम लोग मौज और विलासिता में खोये हुए हो। हम क्रान्तिकारी, तुम्हें इसका दण्ड देने आये हैं। साथियो! टूट पड़ो, एक भी अंग्रेज बचकर जाने न पाये। (गोली चलाने का स्वर।)

(गोली के साथ बम विस्फोट एवं अन्य गोलियाँ चलाने, चीख पुकार के स्वर।)

प्रीति– आज इन अंग्रेजों को दिखा देना है कि हमारी भुजाओं में कितनी ताकत है।

एक अंग्रेज– पोजीशन, पोजीशन, क्रान्तिकारी अधिक नहीं हैं, सामना, सामना करो, अभी हमारा पुलिस आ जायेगा, हमने फोन कर दिया है। (गोली की आवाज।)

(गोलियों के आदान– प्रदान के स्वर)

प्रीति– (आह! के स्वर से लगता है कि प्रीति को गोली लग गयी है) आह!

एक साथी– क्या बात है प्रीति, लगता है तुम्हें गोली लगी है?

प्रीति– मेरी चिन्ता ना करो दत्ता! क्लब ध्वस्त हो रहा है। मोर्चा जारी रखो (गोली चलाने के स्वर।)

(बीच–बीच में आह! ओफ! आदि के स्वर।)

एक अंग्रेज– सारा क्लब समाप्त हो गया। (आश्चर्य से) अरे इतना डुबला–पटला लड़की, इसके हाथ में पिस्टौल। लड़की! पिस्टौल फेंक दो, तुम हमारी पिस्टौल के निशाने पर हो।

(बदले में गोली चलने का स्वर।)

अंग्रेज– कितना निडर लड़की है, लेकिन घायल है, हमने देख लिया है तुमको गोली लगा है लड़की। ये भोट अच्छा है कि तुम हमें मिल गया, तुमसे तुम्हारे सारे साथियों का पता लगेगा। (बढ़ते कदमों का स्वर।)

प्रीति– तेरा यह सपना कभी पूरा नहीं होगा, मैंने अपना काम पूरा कर दिया और मेरे जीते–जी कोई अंग्रेज मेरे शरीर को हाथ भी नहीं लगता सकता। (गिरने का स्वर) जय हिन्द (मद्धम स्वर में) जय हिन्द।

अंग्रेज– मर गया, लगता है इसने जहर खा लिया, भारत का लेडी कमाल का है। (दो कदम आगे बढ़कर) अरे इसके पॉकेट में यह कागज कैसा है? (कागज की सरसराहट) अरे यह तो हम पढ़ नहीं सकटा। ए दरबान! क्या टुम इसको पढ़ सकटा हैं?

दरबान– हाँ साहब!

अंग्रेज– तो पढ़ो।

दरबान– चटगाँव शस्त्रागार काण्ड और उसके बाद जो कुछ हो रहा है, वह भविष्य में होने वाले एक विशाल युद्ध का ही एक अंग है। ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध क्रान्तिकारियों के दल ने १८ अप्रैल १९३० से यह संघर्ष आरम्भ किया है और यह उस समय तक बिना रुके चलता रहेगा, जब तक कि देश आजाद नहीं हो जाता। जय हिन्द!

(संगीत अंतराल के साथ ही उद्घोषक का स्वर उभरता है।)

उद्घोषक– २४ सितम्बर १९३२ का दिन, बलिदान के इतिहास में १७ वर्षीय प्रीतिलता के बलिदान के रूप में, सदा अमर रहेगा।

– आगरा (उ. प्र.)

प्राण पद्म से अर्चना

– गोपाल माहेश्वरी

उस बरसात में केवल आसमान से पानी नहीं बरसता था साथ ही बरस रही थी असख्य देशभक्त भारतीयों के उद्‌गारों से अंग्रेजों के प्रति क्रोध की ज्वालाएँ और राक्षसी क्रूरता लिए अंग्रेजों और अंग्रेजों की नौकरी कर रहे भारतीय पुलिस और सेना के जवानों की बन्दूकों से तड़ातड़ गोलियाँ। पकड़े जाने पर लात, घूँसों और चाबुकों की बौछारें तो क्रान्तिकारियों के शरीर पर बिना रुके कभी भी होती रहती थीं।

यह वर्ष था १९४२ का और महिना अगस्त का। हिन्दू तिथि से भी लगभग इसी समय रक्षाबंधन का पावन त्यौहार आता है। भाई–बहिनों के पवित्र प्रेम और पारस्परिक रक्षा के अभिवचन का महान पर्व।

यह प्रसंग जिस दिन का है उस दिन अंग्रेजी दिनाँक वह थी बारह अगस्त १९४२, भारतीय तिथि से वह अमावस्या का दिन था। रक्षाबंधन ठीक १५ दिन बाद आने वाला था, लेकिन तीन दिन पूर्व ही ९ अगस्त को मुम्बई से महात्मागाँधी भारतीयों को **'करो या मरो'** के आह्वान के साथ **'अंग्रेजों भारत छोड़ो'** की चुनौती दे चुके थे। आन्दोलन की आग आकाश में कड़कने वाली बिजली की तरह सारे देश में फैली। जगह–जगह बच्चे–बूढ़े–जवान, नर–नारी **'भारतमाता की जय'** के घोष से दिशाएँ गुँजाते जत्थे के जत्थे निकल पड़े। वे सरकारी थानों, न्यायालयों, प्रशासकीय भवनों पर यूनियन जेक हटाते और तिरंगा फहरा कर **'अंग्रेजों भारत छोड़ो'** की चेतावनी देने। पटना में एक ऐसी ही घटना में कल ही अनेक नौजवानों ने स्वतंत्रता की देवी को अपने प्राणों के पुष्प चढ़ाकर पूजा था। इस आहुति से देशभक्ति का यज्ञकुण्ड और भी धधक उठा।

प्रयागराज विश्वविद्यालय के प्रांगण में जमा सैकड़ों छात्र–छात्राओं को एक २० वर्ष का युवा संबोधित कर रहा था– ''अंग्रेज समझते हैं उनकी गोली लाठी के डर से हम अपनी स्वतंत्रता की माँग

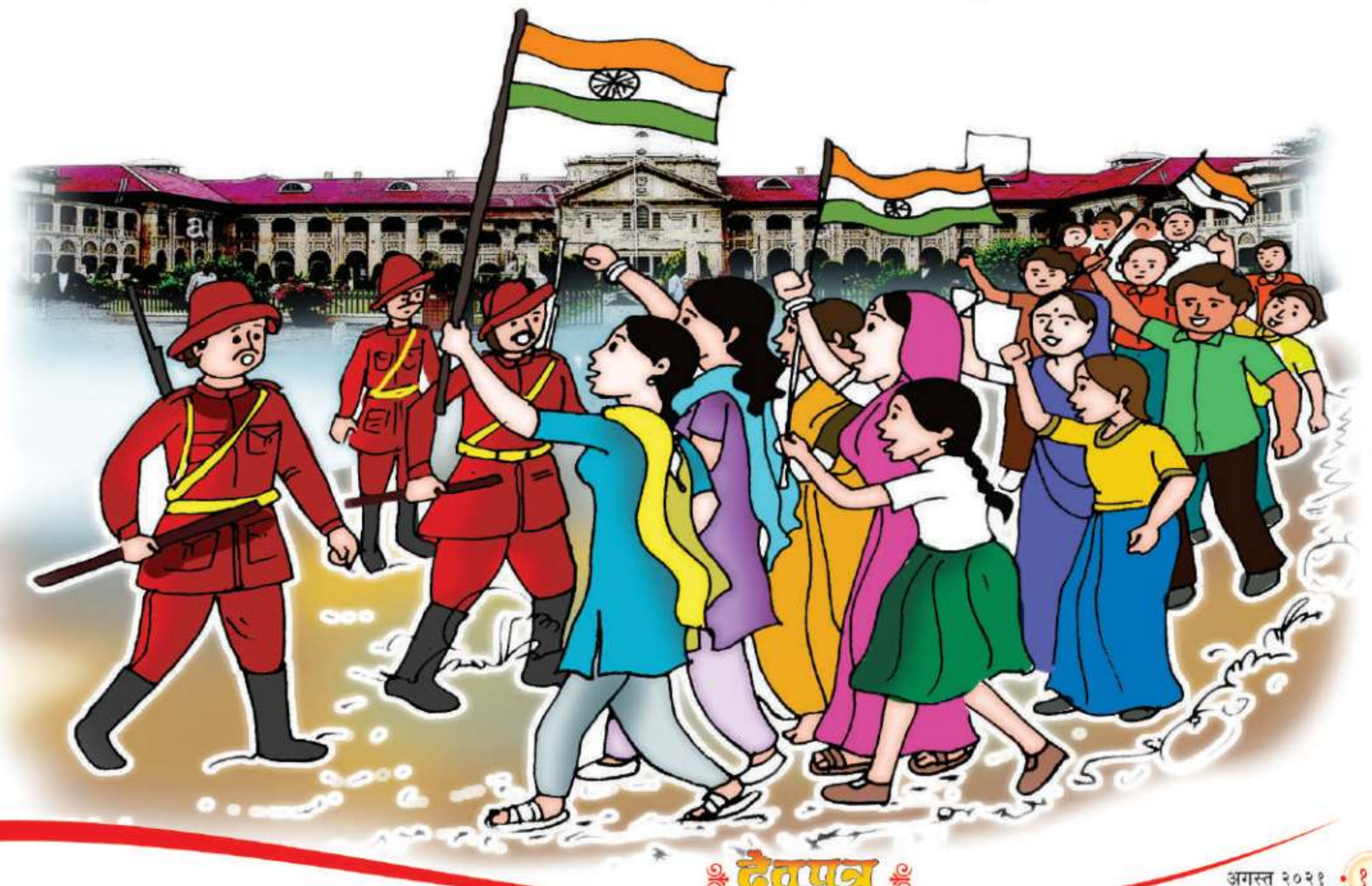

छोड़ देंगे। हमारी भारतमाता को ऐसे ही पराधीन बना रहने देंगे। नहीं ऐसा अब नहीं होगा। उन्हें भारत छोड़ना होगा, छोड़ना ही होगा। पटना और देश के अनेक स्थानों पर हमारे जैसे ही युवाओं ने इस चुनौती को स्वीकारा है, अंग्रेजों को ललकारा है। क्या हम पीछे हटकर घरों में बैठे रहेंगे ? अपनी पढ़ाई अपने भविष्य की चिंता पर देश का ही भविष्य गुलाम बना रहा तो हमारा भविष्य भी गुलामी भरा ही होगा। बोलो क्या कहते हो.. ?'' जैसे शेर दहाड़ रहा हो। तभी जैसे ज्वालामुखी फटा हो। असंख्य छात्रों के कण्ठ से फूटा **'वन्दे मातरम्' 'भारतमाता की जय'** लगा जैसे आकाश फट जाएगा। स्थानीय प्रशासन थर्रा उठा था।

हाथों में तिरंगा थामे यह देशभक्तों की सेना चल पड़ी प्रयागराज जिला न्यायालय की ओर, पर अंग्रेजी पुलिस के कप्तान ने मोर्चा सम्हाल लिया था। उसने सेना को भी सतर्क कर दिया था। इस जनसमुद्र को रोकने हेतु वह चट्टान बना अड़ा हुआ था। वह इतना नहीं जान सका कि समुद्र में जब प्रलय का ज्वार उठता है तो उसे पहाड़ भी नहीं रोक सकते फिर छोटी–मोटी चट्टानों का सामर्थ्य ही क्या है ?

जुलूस में सबसे आगे थीं साहस और देशभक्ति की जीवित पुतलियाँ बनी छात्राएँ। सामने तनी बन्दूकों को देख वह युवा जुलूस के पिछले भाग में अपनी रणनीति समझाने क्षणभर को आगे से हटा ही था कि अंग्रेजी पुलिस ने छात्राओं को अबला समझ उनसे तिरंगा छीनने के लिए झूमाझटकी की। किन्तु जब देशभक्ति जाग्रत हो तो साधारण देहों में भी असाधारण शक्ति अवतरित हो जाती है। आज तो उनके शरीर से मृत्यु के देवता भी आ जाएँ तो प्राण तो छीन सकते थे पर हाथों से तिरंगा नहीं। किन्तु यह युवा अपनी बहिनों को अकेले कैसे जूझने देता ? सिंह के समान दहाड़ता हुआ सीधे पुलिस कप्तान को ललकारा– ''अरे निर्लज्ज! तुम्हें शर्म नहीं आती निहत्थी लड़कियों से झूमाझटकी करते उन पर लाठियाँ तानते ? अरे! अपनी बहादुरी पर ताकत पर इतना ही घमण्ड है तो मुझसे भिड़कर दिखाओ ?''

आगे के वाक्य पूरे भी न हो सके थे कि ''धाँय धाँय धाँय'' क्रोध से पगला उठे पुलिस कप्तान ने सीधे नौजवान की छाती को छेद दिया।

रक्त की धाराएँ मातृभूमि का अभिषेक कर उठी वीर पूजा की यही पद्धति है बलिदानों की वेदी पर आसीन स्वतंत्रता की देवी को रक्त से नहलाकर उन्हें मस्तकों के फूल चढ़ाए जाते हैं और प्राणों का भोग अर्पित किया जाता है तब वे प्रसन्न होती हैं।

अपने बन्धु को गिरते सबसे पहले छात्राएँ देख रहीं थी। वे प्रलय की ज्वालाएँ बन गईं। नारी शक्ति जब कालिका बन क्रोध करे तो स्वयं महाकाल भी नहीं रोक पाते फिर इन अंग्रेजी खटमलों की तो बिसात ही क्या थी। परिस्थिति अनियंत्रित होती देख डिप्टी कमीश्नर मि. रजा वहाँ आ पहुँचे। अंग्रेजी कप्तान एस. एन. आगा की बर्बरता देखकर वे बहुत दुखी हुए और उसे फटकार लगाकर सबको शांत करने का प्रयत्न किया। सामने खड़े अपनी युवावस्था को देश पर हँसते हुए बलिदान करने वाली यह जनसेना उन्हें इतनी प्रभावित कर गयी कि अपनी नौकरी छोड़ वे भी क्राँतिकारी बन गए।

प्रयागराज विश्वविद्यालय में आज भी उस आजादी के दीवाने की प्रतिमा स्वतंत्र भारत के युवाओं को स्वतंत्रता के मूल्य समझा रही है। उस वीर युवा का नाम था **'पद्मधर सिंह'** वह मध्यप्रदेश के सतना के निकट माधवगढ़ के राजवंश से था अपनी पढ़ाई करने प्रयागराज गया था पर देशभक्ति का पाठ पढ़ाने में सदा के लिए खो गया फिर लौटा नहीं। पिता ने अपने चारों पुत्र के नाम रखे थे शंखधर, चक्रधर, गदाधर और पद्मधर। सबसे छोटा **'पद्मधर'** भारत माता के चरणों में अपना प्राण पद्म चढ़ा चुका था।

– इन्दौर (म. प्र.)

क्रांतिकारियों के प्रेरणास्रोत थे लोकमान्य तिलक

– अभय मराठे

लोकमान्य तिलक

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में **'लाल, बाल, पाल'** त्रिमूर्ति की ऐतिहासिक भूमिका रही थी। उन्हें क्रांतिकारियों के प्रेरणास्रोत भी कहा जाता है। जितने भी क्रांतिकारी योद्धा रहे वे कहीं न कहीं इस महान त्रिमूर्ति से प्रेरित थे।

ऐसा ही प्रसंग है, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जी का। १९१६ में काँग्रेस का राष्ट्रीय अधिवेशन लखनऊ में आयोजित किया गया था। उस अधिवेशन में लोकमान्य तिलक जी आने वाले थे। उस समय काँग्रेस में दो समूह थे **'नरम दल'** और **'गरम दल'** तिलक जी गरम दल का नेतृत्व करते थे। एक दिवस पहले लखनऊ में अधिवेशन के अध्यक्ष श्री अम्बिका चरण मजूमदार आये और उनकी नरम दल के लोगों ने लखनऊ स्टेशन से अधिवेशन स्थल तक जोरदार शोभायात्रा निकाली। दूसरे दिन लोकमान्य तिलक जी विशेष ट्रेन से लखनऊ आने वाले थे। उनका जोरदार स्वागत तथा शोभायात्रा निकालने की तैयारी गरमदल के लोग जिनमें विशेषकर नवयुवक उत्साहित थे ताकि कल वाली शोभायात्रा फीकी पड़ जाये।

इस योजना की भनक नरमदल को लगी तो उन्होंने तिलक जी के स्टेशन पर पहुँचते ही **'अपहरण'** कर एक बन्द कार में बैठाकर अधिवेशन स्थल पर ले जाने की योजना बनाई। जैसे ही तिलक जी लखनऊ स्टेशन पर पहुँचते ही दूर-दूर गाँव और नगरों से आये उत्साहित नवयुवकों ने तिलक जी को घेर लिया और कंधे पर बैठाकर स्टेशन के बाहर ले आये। उसी समय नरमदल के लोगों ने घेरा तोड़कर तिलक जी को कार में बैठाया तो इस चेष्टा से गरमदल के लोग दौड़कर कार के सामने लेट गए। उनमें से एक नवयुवक रोते हुए जोर-जोर से बोल रहा था- ''कार मेरे ऊपर से निकाल कर ले जाओ।'' उसे देखते ही कई अन्य नवयुवकों ने तिलक जी को आदरपूर्वक कार से बाहर निकालकर अपने कंधे पर बैठाकर एक बग्गी के पास ले आये। उस बग्गी में उन्हें बैठाने के लिए उसी युवक ने नीचे बैठकर अपनी पीठ पर तिलक जी को पैर रखने को कहा और वे पीठ का सहारा लेकर बग्गी में बैठ गए।

रामप्रसाद बिस्मिल

बग्गी के घोड़े खोल दिए और उनकी बग्गी को खींचने के लिये लोगों में होड़ लग गयी। लोकमान्य तिलक जी को बग्गी में बैठाकर अधिवेशन स्थल तक एक ऐतिहासिक शोभायात्रा के रूप में ले आये।

जिस युवक ने तिलक जी को नरमदल वालों से हथियाने और कार के सामने लेटा था वह युवक काँग्रेस का सदस्य नहीं था। वह १९ वर्षीय वीर युवक था **'महान क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल'** जो अपने साथियों के साथ शाहजहाँपुर से लखनऊ केवल अपने आराध्य तिलकजी के दर्शन करने आया था। जो आगे चलकर स्वयं एक प्रखर क्रान्तिकारी बन गया।

– उज्जैन (म. प्र.)

लेफ्टीनेंट मनोज कुमार पाण्डे

युद्ध हो या शांति सेना सदैव तैयार रहती है। युद्ध के समय शत्रुओं पर टूट पड़ना और शांति के समय देशवासियों की हर संभव सहायता के लिए जो कभी पीछे नहीं हटती वे हमारी सेनाएँ ही तो हैं। ग्यारहवीं गोरखा रायफल की पहली बटालियन ऐसे ही एक अवसर पर सियाचीन ग्लेशियर की अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में अभियान पूरा कर अब पूना जाने की तैयारी में थी। एक अग्रिम दस्ता तो पूना पहुँचकर सर्दियों के मान से अपनी वर्दियों और हथियारों की संग्रह व्यवस्था में सक्रिय भी हो चुका था।

१/११ गोरखा रायफल्स ने **'ऑपरेशन विजय'** अपने हाथों में लिया तो लेफ्टीनेंट मनोज पाण्डे ने स्वयं होकर अपने लिए सबसे कठिन कार्य चुने। अग्रिम चौकियों पर वे पहले अधिकारी थे जो स्वयं सब तरह का खतरा उठाकर पहुँचे थे।

९ मई १९९९ वे भारतीय सेना के उन चार सैनिकों के शव ढूँढ़ने में सफल हो चुके थे जिन्हें पाकिस्तानी घुसपैठियों ने मार डाला था। इसके बाद पाकिस्तान द्वारा हथियाए गए कूकर थाँग से सम्पर्क बनाया। उनकी टोली ने ही जुबर पर भी भारत के लिए अधिकार कर लिया था और पहली चौकी स्थापित की थी।

२–३ जुलाई १९९९ प्लाटून कमांडर के रूप में वे खालूबार की ओर बढ़ चले। चारों ओर ऊँचाई से बंकरों से दुश्मन की गोलियाँ बरस रही थीं अपनी टुकड़ी को सुरक्षित स्थान पर डटाकर हवलदार भीम बहादुर को एक टुकड़ी के साथ दाएँ भेजकर दूसरी टुकड़ी लिए स्वयं बाँई ओर बढ़ चले। दो बंकर उन्हें और चार इन्हें खाली कराना थे। तीसरा बंकर खाली होते–होते वे बुरी तरह घायल हो चुके थे। **'आयो गोरखाली'** की सिंह गर्जना से घाटी गूँज उठी और इस घायल सिंह ने चौथे बंकर पर ग्रेनेड फेंका निशाना अचूक था पर एक मशीनगन फट जाने से लेफ्टीनेंट मनोज का सिर बहुत अधिक जख्मी हो गया। एक बार फिर गढ़ जीता पर सिंह गया। भारी गोला बारूद जप्त कर छ: महत्वपूर्ण बंकर छीन लिए गए। खालूबर हमारा हुआ। राष्ट्र ने परमवीरचक्र से ले. मनोज पाण्डे को कृतज्ञता से श्रद्धांजलि अर्पित की।

छ: अंगुल मुस्कान

– विष्णु प्रसाद चौहान

♦ समय–समय की बात है। कभी घर पर पड़े रहने वालों को निकम्मा कहा जाता था और कोरोना काल में समझदार।

♦ अपने समय में बोर्ड की परीक्षा बहुत कठिन होती थी। और आजकल... बोर्ड के लिए परीक्षा लेना कठिन हो चुका है।

♦ भगवान ने सब सोच समझकर बनाया है... अब देखो कान इतने बाहर ना निकले होते तो... मॉस्क क्या कील ठोक कर लगाते!

♦ लॉकडाऊन के कारण नींद इतनी अधिक हो गई है कि... ना केवल सपने रिपीट हो रहे हैं, बल्कि बीच–बीच में विज्ञापन भी आने लगे हैं।

♦ गुजर रही है जिंदगी ऐसे मुकाम से।
अपने भी पराए लगने लगे सर्दी जुकाम से।।

♦ बताओ कैसा समय आया है,
बच्चे माँ–बाप को टीका लगवाने जा रहे हैं।

– ढाबला हरदू

सहयोगी सुभाष

– मदनगोपाल सिंघल

परीक्षा के दिन निकट आये तो उसने खेल के मैदान में जाना बन्द कर दिया। साथियों को इस पर आश्चर्य हुआ। उनकी समझ में नहीं आया कि जो छात्र सदा ही अन्य बालकों को खेलों में भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करता रहा है वह स्वयं खेलों से क्यों अनुपस्थित रहने लगा। वे सब मिलकर उसके घर पहुँचे। वह उस समय भी वहाँ नहीं था।

''हमारा साथी कहाँ है?'' बालकों ने उसकी माँ से पूछा।

''खेलने गया होगा!'' माँ ने उत्तर दिया।

''नहीं तो, हम लोग तो वहीं से आ रहे हैं। वह खेलने तो कई दिन से नहीं गया है। परीक्षा निकट जानकर कहीं आपने ही तो उसे पढ़ने में नहीं लगा दिया?'' बालकों ने कहा।

''नहीं, नहीं।'' माँ ने कहा– ''वह तो जैसे ही विद्यालय से आता है बस्ता अलमारी में रखकर खेलने के लिये भाग जाता है। कोई बात नहीं, मैं आज ही उससे पूछूँगी।''

संध्या के समय बालक अपने घर लौटा तो माँ ने उसे अपने पास बुलाया।

''बेटा कहाँ जाता है तू नित्य सायंकाल? खेलों में तो तू जाता नहीं।'' उन्होंने उससे पूछा।

''मैं दो लड़कों को पढ़ाने जाता हूँ माँ!'' बालक ने उत्तर दिया।

''ऐसा क्यों करता है तू?'' माँ को क्रोध आ गया यह सुनकर– ''क्या खर्च करने के लिये मैं तुझे कुछ कम पैसे देती हूँ? ऐसा काम करना तुझे शोभा नहीं देता।''

''यह तो सब ठीक है माँ!'' बालक ने उत्तर दिया– ''मुझे घर से बहुत पैसे मिल जाते हैं। किन्तु

मेरा एक साथी है, वह बहुत निर्धन है। मैं दूसरों को पढ़ाकर जो कुछ लाता हूँ उसे दे देता हूँ। आखिर उसको भी तो परीक्षा देनी है न।''

माँ शान्त हो गई, उसका क्रोध न जाने कहाँ उड़ गया।

''बेटा यह बात तुमने मुझसे पहिले क्यों नहीं बताई? उसके लिये तुमने मुझसे खर्चा क्यों नहीं माँग लिया?'' माँ ने कहा।

''नहीं माँ! ऐसे दिया हुआ धन तो दान कहलाता है।'' बालक ने उत्तर दिया। ''और दान को न मैं अच्छा समझता हूँ और न मेरा मित्र ही उसे स्वीकार करने को तैयार होता।''

माँ का मस्तक ऊँचा हो गया। उसने गर्व के साथ अपने बच्चे की ओर देखा।

इस बालक का नाम था सुभाष! जिसे हम नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के नाम से जानते और पहचानते हैं।

गप्पू जीत गया

– बलदाऊ राम साहू

शाला में हर बार की तरह इस बार खेलों का आयोजन होना है। जंगल के सभी बच्चे अपनी रुचि के अनुसार खेलों में पदक जीतने की तैयारी में लगे हुए थे। गप्पू भालू दौड़ में हर बार पीछे रह जाता था जबकि पिंटू बंदर हर बार विजयी होता था। गप्पू को हर बार हार जाना अच्छा नहीं लगता, पर क्या करें? वह मन मारकर रह जाता। पिंटू की लंबी छलाँगों के आगे किसी का बस नहीं चलता था।

गप्पू को अपना शरीर मोटा होने के कारण हारने की कमजोरी ज्ञात थी। फिर भी वह प्रयत्न करते आ रहा था। परन्तु वह इस बार हारना नहीं चाहता, इसीलिए उसने अपना मोटापा कम करने के लिए प्रतिदिन प्रातःकाल चार बजे उठकर दौड़ लगाना आरंभ कर दिया था। अपने बाल भी चिंपाजी नाई के पास जाकर कटा लिये थे। गप्पू को कुछ दुबले होते देख उसके कुछ मित्र उसे चिढ़ाने और कुछ उसे प्रोत्साहित करने लगे। इन मित्रों के प्रोत्साहन से उसका उत्साह और बढ़ रहा था।

गप्पू स्वयं को पहले से अधिक फुर्तीला अनुभव कर रहा था। उसने अपनी दौड़ने की गति भी बढ़ा ली है। उसे लग रहा था कि इस बार उसे सफलता अवश्य मिलेगी।

गप्पू आज सुबह–सुबह दौड़ने के लिए निकला, तभी उसने देखा की कालू सियार भी उसके पीछे–पीछे दौड़ते आ रहा है। लेकिन वह बिना चिंता किए दौड़ता रहा। कालू सियार अपनी गति बढ़ाकर गप्पू के पास पहुँच गया और गप्पू के साथ–साथ दौड़ने लगा।

कुछ देर मौन रहने के बाद कालू ने कहा– ''गप्पू भाई! हम कितना भी प्रयत्न कर ले पिंटू से जीत नहीं सकते। हमारा यह प्रयास केवल आत्म संतोष के लिए है।''

''हाँ, तुम ठीक कहते हो, जो बिना खेले ही हार मान लिया है। वह जीतेगा कैसे?'' मैं तो केवल जीतने के लिए खेलता हूँ और मैं हार में भी अपनी जीत देखता हूँ।'' ''वह कैसे?'' कालू ने पूछा।

''व्यक्ति को आशावादी होना चाहिए और निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए। सफलता उसे अवश्य मिलेगी।''

गप्पू की बात सुनकर कालू को हँसी आ गई। उसने मन–ही–मन सोचा गप्पू बोलता बहुत है।

''ठीक है गप्पू भाई! तुम दौड़ो, मेरा तो बस हो गया। मैं कुछ देर यहाँ बैठकर विश्राम कर लेता हूँ।''

कालू के रुक जाने के बाद भी गप्पू ने अपनी दौड़ प्रारम्भ रखी और प्रत्येक दिन की तरह अपने लक्ष्य तक पहुँचा।

अब विद्यालय के खेल आयोजन की तिथि में मात्र तीन दिन शेष रह गये थे। गप्पू ने इस बार पूरे मनोयोग से अपनी तैयारी की थी। वह बार–बार यही दोहराता था कि– **''प्रयत्न करने वाले, पराजित नहीं होते।''**

वह अपने मित्रों को भी यही मंत्र देता है, किन्तु कुछ ऐसे थे कि गप्पू का उपहास भी उड़ाते थे, परन्तु वह निराश कभी नहीं होता था।

वह दिन आ गया जिसकी सभी को प्रतीक्षा थी। विभिन्न वेश–भूषाओं से सजे। मन उत्साह भरे सभी अपना पराक्रम दिखाने के लिए तत्पर थे। सबसे पहले लड़कियों की रस्सी कूद से खेल का प्रारम्भ हुआ। जिसमें चिंकी गिलहरी को प्रथम पुरस्कार मिला। इसके बाद सभी दौड़ की प्रतीक्षा ही कर रहे थे कि खेल शिक्षक हिरनी ने सीटी बजाई। दौड़ में भाग लेने वाले खिलाड़ी एक स्थान पर एकत्र हो गए।

खेल शिक्षक ने नाम लेकर सबसे शुरुआत की रेखा पर खड़े होने के लिए कहा। पिंटू बंदर ने सबसे पहले अपना स्थान ग्रहण किया। गप्पू भी पूरे आत्म विश्वास के साथ मैदान में आया, रिंकी लोमड़ी और कालू सियार भी अन्य खिलाड़ियों के साथ मैदान में उतरे। खेल शिक्षक ने लंबी सीटी बजाई ताकि दर्शक ट्रेक छोड़ दें। जैसे ही खेल शिक्षक ने 'शुरू' कहा सभी ने अपनी स्थिति ले ली। जैसे ही उसने संकेत दिया सभी दौड़ पड़े। सभी बच्चे अपने–अपने पक्ष के

खिलाड़ियों को प्रोत्साहित कर रहे थे। पूरा मैदान गूँजने लगा। किसी ने कालू को प्रोत्साहित किया तो किसी ने गप्पू को। पिंटू बंदर सबसे आगे चल रहा था। उसके पीछे रिंकी लोमड़ी थी। गप्पू अब भी तीसरे क्रम पर चल रहा था।

बच्चे लगातार गप्पू–गप्पू चिल्ला रहे थे। गप्पू–गप्पू की आवाज सुनकर पिंटू बंदर और रिंकी लोमड़ी बार–बार पीछे देखते थे कि कहीं गप्पू आगे न आ जाए।

आठ सौ मीटर की दौड़ बहुत लंबी होती है। शुरु में तेज दौड़ने के कारण पिंटू बंदर कुछ अधिक आगे निकल गया था। सभी यह मान बैठे थे कि दौड़ तो पिंटू ही जीतेगा, किन्तु गप्पू ने अपना प्रयास निरंतर रखा था। बार–बार पीछे मुड़कर देखने के कारण पिंटू की गति कुछ कम हो जा रही थी और गप्पू को अधिक समर्थन मिलने से उसका मन विचलित भी हो रहा था।

खेल शिक्षक जोर से चिल्लाए यह आखरी चक्र है। गप्पू ने अपनी गति बढ़ा दी और पिंटू के आस–पास पहुँच गया। गप्पू को पास आते देखकर पिंटू ने भी गति बढ़ा दी। अब तो पहले क्रम पर पिंटू, दूसरे पर गप्पू और तीसरे पर रिंकी लोमड़ी थी। गप्पू को दूसरे क्रम पर देखकर उसके साथियों ने एक बार फिर से गप्पू–गप्पू चिल्लाया। अब फिर पिंटू ने जैसे ही अपनी गति बढ़ाई वैसे ही उसका पैर फँस गया और वह गिर पड़ा। पिंटू अपने को सँभालता तब तक गप्पू ने गति बढ़ाकर समापन रेखा को छू लिया। सबने एक साथ चिल्लाया गप्पू–गप्पू यह पहला अवसर था, जब गप्पू ने विजय प्राप्त की थी। जो गप्पू का उपहास उड़ाते थे उनका भी मुँह बंद हो गया। गप्पू ने ठीक कहा था– **''प्रयत्न करने वाले, पराजित नहीं होते।''** सभी ने गप्पू को बधाईयाँ दी। पिंटू ने भी गप्पू को बधाई दी।

– दुर्ग (छत्तीसगढ़)

मातृभूमि की गोद में

– ऋषिमोहन श्रीवास्तव

उन दिनों प्रसिद्ध देशभक्त और क्रांतिकारी रासबिहारी बसु जापान में रह रहे थे। वे उन दिनों निर्वासित जीवन व्यतीत कर रहे थे।

जब रात होती तो वे दक्षिण पश्चिम दिशा की ओर सिर करके सोते। जापान में इस दिशा में सिर करके सोना अशुभ माना जाता है।

जापान के कई लोगों ने उन्हें टोका भी। रास बिहारी बसु के एक साथी ने भी उनसे पूछा– ''आप इस दिशा में सिर करके क्यों सोते हैं?''

रास बिहारी बसु थोड़ा मुस्कुराए फिर बोले– ''आप लोग नहीं समझते दक्षिण–पश्चिम दिशा की तरफ मेरी **'मातृभूमि भारत'** है।

इस दिशा में सोने का मेरा उद्देश्य यह है कि पूरी रातभर अपनी मातृभूमि की गोद में सोता रहूँ। इस मातृभूमि को मैं जागते हुए तो नहीं पा सकता तो फिर सोते समय ही इसे प्राप्त कर लेता हूँ।''

रास बिहारी बसु की बात को सुनकर उनका वह हिन्दुस्थानी मित्र भी दक्षिण–पश्चिम दिशा में सिर करके सोने लगा।

– ग्वालियर (म. प्र.)

संस्कृति प्रश्नमाला

- *रावण से अंतिम युद्ध के समय श्रीराम की सहायता के लिए रथ किसने भेजा था?*
- *महारथी और श्रेष्ठ धनुर्धर अर्जुन के शंख का क्या नाम था?*
- *यूरोप की कौन सी भाषा संस्कृत से सर्वाधिक मिलती–जुलती है?*
- *राजस्थान स्थित विश्व की सबसे प्राचीन पर्वत शृंखला कौन सी है?*
- *हमारे देश में दिशाओं की संख्या कितनी मानी जाती है?*
- *पाटलीपुत्र से पहले मगध की राजधानी कौन सा नगर था?*
- *वनस्पति–विज्ञान का सबसे प्राचीन ज्ञात ग्रंथ कौन सा है?*
- *२४ मार्च, १९०२ को बंगाल में किस क्राँतिकारी संगठन की स्थापना की गई?*
- *मारवाड़ (राजस्थान) की कौन सी नगरी का नाम दानवीर बलि के नाम पर है?*
- *ऑक्सफोर्ड लैंग्विजेज ने किस शब्द को वर्ष–२०२० का हिन्दी भाषा का शब्द घोषित किया है?*

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

डॉक्टर की फीस
चित्रकथा: देवांशु वत्स
चलो, मुँह खोलो। आऽ ऽ
आऽ ऽ
अईईऽऽऽ
फिर...
कितनी फीस हुई डॉक्टर?
आठ सौ रुपए मात्र!
आठ सौ! पर आपकी फीस तो दो सौ रुपए ही हैं!!
हाँ, पर आपकी बच्ची की चीख सुन कर...
...मेरे तीन मरीज भाग खड़े हुए!!
समाप्त

राखी का चमत्कार

– डॉ. सेवा नंदवाल

सरकारी आदेश निकल चुका था और विभिन्न पेड़ों की जान सांसत में थी जैसे वे अंतिम दिन गिन रहे थे। अब कोई चमत्कार ही उनके प्राण बचा सकता था। मुंबई महानगर के उस उपनगर क्षेत्र में एक भव्य अन्तरप्रांतीय बस अड्डे की आवश्यकता थी। अत: तय किया गया कि १६ वर्ग किलोमीटर की उस हरित पट्टी के पेड़ों को काटकर, जगह साफ समतल कर यह कार्य पूरा किया जाएगा।

उस विशाल परिसर में लगभग तीन हजार विविध प्रकार की प्रजातियों के वृक्ष लगे हुए थे जो वर्षों से हरियाली, छाँव और सुस्वादु फल प्रदान कर रहे थे। उस हरित पट्टी पर पहुँचकर लोग बड़ी शांति का अनुभव करते थे। असंख्य पक्षियों का वहाँ बसेरा स्थापित था। महानगर में ऐसे स्थान अब नहीं के बराबर बचे थे।

आम्रवृक्षों की वहाँ बहुतायत थी जिसके फल बहुत स्वादिष्ट थे। सबसे अधिक पुराने वृक्षों की आयु १५० वर्ष हो चुकी थी और वे काफी ऊँचाई तक पहुँच चुके थे।

उस दिन रात के सन्नाटे में सारे पेड़ अपने अस्तित्व की चिंता में चर्चारत थे। एक युवा नीम वृक्ष ने पूछा– ''क्या कोई रास्ता नहीं अपने जीवन को बचाने का?''

''लगता तो ऐसा ही है। वैसे हमारे महत्व को सब अच्छी प्रकार जानते हैं किन्तु इसके बाद भी जन इन्होंने निर्णय कर लिया है तो फिर संसार की कोई शक्ति हमें बचा नहीं सकती।'' बरगद के वृक्ष ने असमर्थता जताई।

''जब तक आस है तब तक सांस है। तुममें से किसी के मस्तिष्क में कोई अच्छा सुझाव आ रहा हो तो बता सकते हो।'' अमरूद के एक वरिष्ठ पेड़ ने प्रोत्साहित किया।

कुछ देर सन्नाटा व्याप्त रहा फिर सन्नाटे को चीरता एक युवा गुलमोहर तत्पर हुआ– ''एक उपाय मेरे मस्तिष्क में है पता नहीं वह कितना सफल हो पाएगा?''

''हाँ शीघ्र बताओ... हम अपने प्राण बचाने के लिए उसे कर सकते हैं।'' नीम वृक्ष ने कहा।

अनुमति पाकर युवा गुलमोहर उन्मुख हुआ– ''हम सबको विदित है कि इस देश में राखी का त्यौहार परम श्रद्धा और विश्वास से मनाया जाता है। अगर हम इस देश की सर्वोच्च व्यक्ति को राखी भेजकर उनसे अपने को बचाने का अनुरोध करें तो...''

उसका प्रस्ताव सुनकर कुछ वृक्षों ने समाधान की श्वास ली, कुछ गहन सोच में पड़ गए। यह प्रस्ताव जैसे अँधेरे में आशा की किरण था। ''रक्षासूत्र के बदले सुरक्षा का वचन देने की परंपरा और उसका निर्वाहन इस देश में सदियों से होता आया है।'' बरगद के अधेड़ पेड़ ने समर्थन व्यक्त किया।

''लेकिन राखी भेजेगा कौन, मतलब किसकी ओर से भेजी जाएगी ?'' नीमवृक्ष ने प्रश्न किया।

''हम सबकी ओर से।'' पीपल वृक्ष ने कहा।

''हम सबका समर्थन तो रहेगा पर मेरे विचार से राखी सर्वाधिक बूढ़े पेड़ की ओर से भेजी जानी चाहिए क्योंकि वरिष्ठजनों की बात को हमेशा महत्व देता आया है यह देश।'' गुलमोहर ने अपना सुझाव दिया।

उसका सुझाव सर्वसम्मति से पारित हुआ। अत: उन तीन हजार पेड़ों में से वरिष्ठतम पेड़ को ढूँढ़ निकाला गया। वह एक आम्रवृक्ष था। सबने मिलकर आम्रवृक्ष की ओर से एक पत्र बनाया और राखी के धागों के साथ भेज दिया। पत्र का विषय इस प्रकार रहा–

आदरणीय महामहिमजी!

मैं भारत के राष्ट्रीय फल आम का वृक्ष हूँ। इस समय मुंबई महानगर में मृत्यु के द्वार पर खड़ा हूँ और आपसे याचना कर रहा हूँ।

मेरी आयु इस समय १५८ वर्ष है और ऊँचाई ६८ फुट। मेरे लगभग ३000 साथी वृक्ष इस समय जीवन–मृत्यु के बीच अन्तर्द्वन्द्व कर रहे हैं।

हममें से कोई भी स्वयं को सुरक्षित रखने में असमर्थ है। इसलिए आपकी सहायता के आकांक्षी हैं। हमें बचा लीजिए।

आपके करकमलों के लिए एक राखी सूत्र प्रेषित कर रहे हैं और बदल में अपने प्राण बचाने की प्रार्थना कर रहे हैं।

भवदीय

आम्रवृक्ष

सात दिन बाद पता लगा कि अभियान सफल रहा। एक बार फिर राखी के धागे आपत्ति पर भारी सिद्ध हुए और अनेक मूक पेड़ों की प्राणरक्षा हो गई।

– इन्दौर (म. प्र.)

पथिक जी की राखी

– शिवकुमार गोयल

मेवाड़ क्षेत्र के गाँव बिजौलियाँ के किसान बेगार तथा सूदखोरों के उत्पीड़न के शिकार थे। अंग्रेज शोषण करने वाले जमींदारों का खुला साथ देते थे। **साधु सीतारामदास** तथा यशस्वी पत्रकार और क्रांतिकारी **श्री. विजयसिंह 'पथिक'** ने बिजौलियाँ के पीड़ित किसानों को संगठित कर दमन के विरुद्ध आवाज उठाने का दृढ़ संकल्प किया।

श्री पथिक जी जानते थे कि जब तब देश के समाचार–पत्रों में किसानों की आवाज मजबूत नहीं होगी, तब तक इस अभियान को सफलता मिलनी कठिन है। उन्होंने कानपुर से प्रकाशित दैनिक 'प्रताप' के यशस्वी संपादक **श्री. गणेशशंकर विद्यार्थी** को एक पत्र के साथ राखी भेजी। पत्र में उन्हें किसानों के अमानवीय उत्पीड़न की जानकारी देते हुए प्राचीन परंपरा के अनुसार राखी की मर्यादा का स्मरण दिलाया।

विद्यार्थी जी ने राखी मिलते ही किसानों के इस आंदोलन के प्रचार का दायित्व वहन किया। बाद में **श्री. लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक** के **'मराठा'** ने भी किसानों की आवाज उठाई। देखते ही देखते बिजौलियाँ के किसानों का आंदोलन सफलता की ओर बढ़ने लगा। उन्हें दमन व उत्पीड़न से मुक्ति मिल गई।

– पिलखुआ (उ. प्र.)

ऊर्जावान बलिदानी खुदीराम बसु

– साँवलाराम नामा

अंग्रेजों के अनाचारों, अत्याचारों, अपमानों, अन्यायों को प्रकट करने के लिए किशोर खुदीराम बसु लोगों के बीच निडरता से पर्चे बाँटा करता था।

एक दिन जब वह पर्चे बाँट रहा था, एक पुलिस कर्मी ने उसका हाथ पकड़ लिया उसके हाथ से पर्चे छीन लिए।

तब खुदीराम को बड़ा भारी क्रोध आया और पुलिस के मजबूत हाथ को एक झटका दे अपना हाथ छुड़ाया और करामात दिखाते हुए हाथ घुमाकर सिपाही की लम्बी नाक जमाकर जोर का घूँसा मारा और दबाव देते बोला– ''मुझे छूने का प्रयत्न न करना वर्ना इसी प्रकार का नाक पर घूँसा पड़ेगा कि तेरी नानी याद आ जाएगी।''

ऐसी चेतावनी देकर बसु वहाँ से गायब ही हो गया। खुदीराम बसु द्वारा जनता के बीच पर्चे बाँटने का यह प्रभाव हुआ कि अधिकांश जनता अंग्रेजों के अन्यायपूर्ण क्रूर कारनामों से अवगत हो गई और ठौर–ठौर पर वे अंग्रेजी प्रशासन, सत्ता के विरुद्ध अपना दबा हुआ रोष प्रकट करने लगी।

इस प्रबल विरोध–प्रदर्शन के परिणाम स्वरूप अंग्रेजी सरकार को बंगाल को विभाजित (बंग–भंग) करने का अपना आदेश मजबूरी में वापस लेना पड़ा।

बाद में यही तरुण खुदीराम बसु पवित्र ग्रन्थ **'श्रीमद्भागवत गीता'** को हाथ में लेकर और **'वन्दे मातरम्'** का पुरजोर घोष करते हुए **'देश–धर्म'** के लिए प्रसन्नता से फाँसी पर चढ़ गए।

धन्य है भारत माता, भारत भूमि जिस पर देश से अंग्रेजों को निकालने भारत माता की गुलामी की बेड़ियाँ काटने भारत, मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए असंख्य लोगों ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव जैसे सपूतों ने **'फाँसी के फन्दे'** को हँसते–हँसते चूमा।।

– भीनमाल (राजस्थान)

आपकी पाती

''शोधपरक दृष्टि हो, कसा हुआ संपादन हो, स्तंभों में विविधता हो, कुछ करने की प्रवृत्ति हो, हर प्रकार का श्रम हो, और शुद्ध भावना हो तो कोई भी कार्य उत्कृष्ट ही होता है।

ऐसा ही है **'देवपुत्र'** का जून–जुलाई २०२१ का अंक। सब कुछ पठनीय संग्रहणीय और मनोरंजक। ऐसे में कोई पाठक मुझ जैसा इस अंक की प्रतिक्रिया देना चाहे तो वह इस अंक में समाहित सामग्री के विषय में सिर्फ और सिर्फ इतना ही कह सकता है कि– उत्तम रचनाकारों की अत्युत्तम रचनाएँ, पारखी संपादक की परख की कसौटी नाम है **'देवपुत्र'**। सबको हार्दिक बधाई।

– ओम उपाध्याय (इन्दौर, म. प्र.)

संस्कृति प्रश्नोत्तरी के सही हल

१) देवराज इन्द्र ने। २) देवदत्त। ३) रूसी भाषा। ४) अरावली। ५) दस। ६) राजगृह। ७) वृक्ष–आयुर्वेद। ८) अनुशीलन समिति। ९) बिलाड़ा। १०) आत्मनिर्भरता।

असली जीत

– सीताराम गुप्ता

रवि के विद्यालय में **'खेल दिवस'** मनाया जा रहा था। विभिन्न खेलों की स्पर्धा चल रही थी। रवि भी बड़े उत्साह से सब प्रतियोगिताओं में भाग ले रहा था। कई प्रतिस्पर्धा में भाग लेने के बाद रवि सौ मीटर की दौड़ में भाग लेने जा रहा था। जैसे ही प्रतियोगिताएँ प्रारंभ करने के लिए संकेत मिला दौड़ में भाग लेने वाले छात्र दौड़ पड़े। रवि भी खूब तेज दौड़ता है लेकिन मनीष से तेज नहीं। मनीष कक्षा में सबजे तेज दौड़ने वाला लड़का है लेकिन न जाने अचानक क्या हुआ कि दौड़ प्रारंभ होने के कुछ देर बाद ही मनीष गिर पड़ा। उसके पीछे वाले लड़के उससे आगे निकल गए। कुछ लड़के तो बिल्कुल उसके ऊपर से होकर निकल गए।

गिरने से मनीष को पहले ही चोट लगी हुई थी लेकिन इन लड़कों की लापरवाही के कारण वह और अधिक चोटिल हो गया। रवि ने जब यह सब देखा तो वह दौड़ बीच में ही छोड़कर सीधा मनीष के पास आया और उसे सहारा देकर उठाया। वह फिर उसे चिकित्सा कक्ष में ले गया। अध्यापकों की सहायता से उसने मनीष का उपचार किया, तथा जब मनीष कुछ स्वस्थ हो गया तो उसे वहीं लिटाकर वापस मैदान में आ गया। कुछ लड़कों ने रवि से कहा कि– ''तुमने बेकार दौड़ बीच में छोड़ी नहीं तो तुम प्रथम आते।'' रवि ने इतना ही कहा कि– ''प्रथम आने से अधिक आवश्यक तो विपत्ति के समय सहपाठियों और मित्रों की सहायता करना है।''

खेलों की समाप्ति के बाद जब पुरस्कार दिए जाने लगे तो रवि को दौड़ का पहला पुरस्कार तो नहीं दिया गया लेकिन प्रधानाचार्य महोदय व सभी शिक्षकों ने उसकी खूब प्रशंसा की और उसे एक विशेष पुरस्कार भी दिया। मनीष भी धीरे–धीरे चलते हुए रवि के पास पहुँचा और उससे कहा– ''रवि मैं तो केवल दौड़ ही जीतता था किन्तु तुमने तो हम सबका मन जीत लिया है।'' और यह कहकर प्रेम से रवि को अपनी बाहों में ले लिया। वातावरण देर तक तालियों की गड़गड़ाहट से गूँजता रहा।

– दिल्ली

भूल सुधार

जून–जुलाई २०२१ के अंक में पृष्ठ ४४ पर श्री पुखराज सोलंकी की रचना बीर बहूटी में चित्र त्रुटिवश गुबरैला (सोनपंखी) का छप गया है। **'बीर बहूटी'** का सही चित्र संलग्न है।

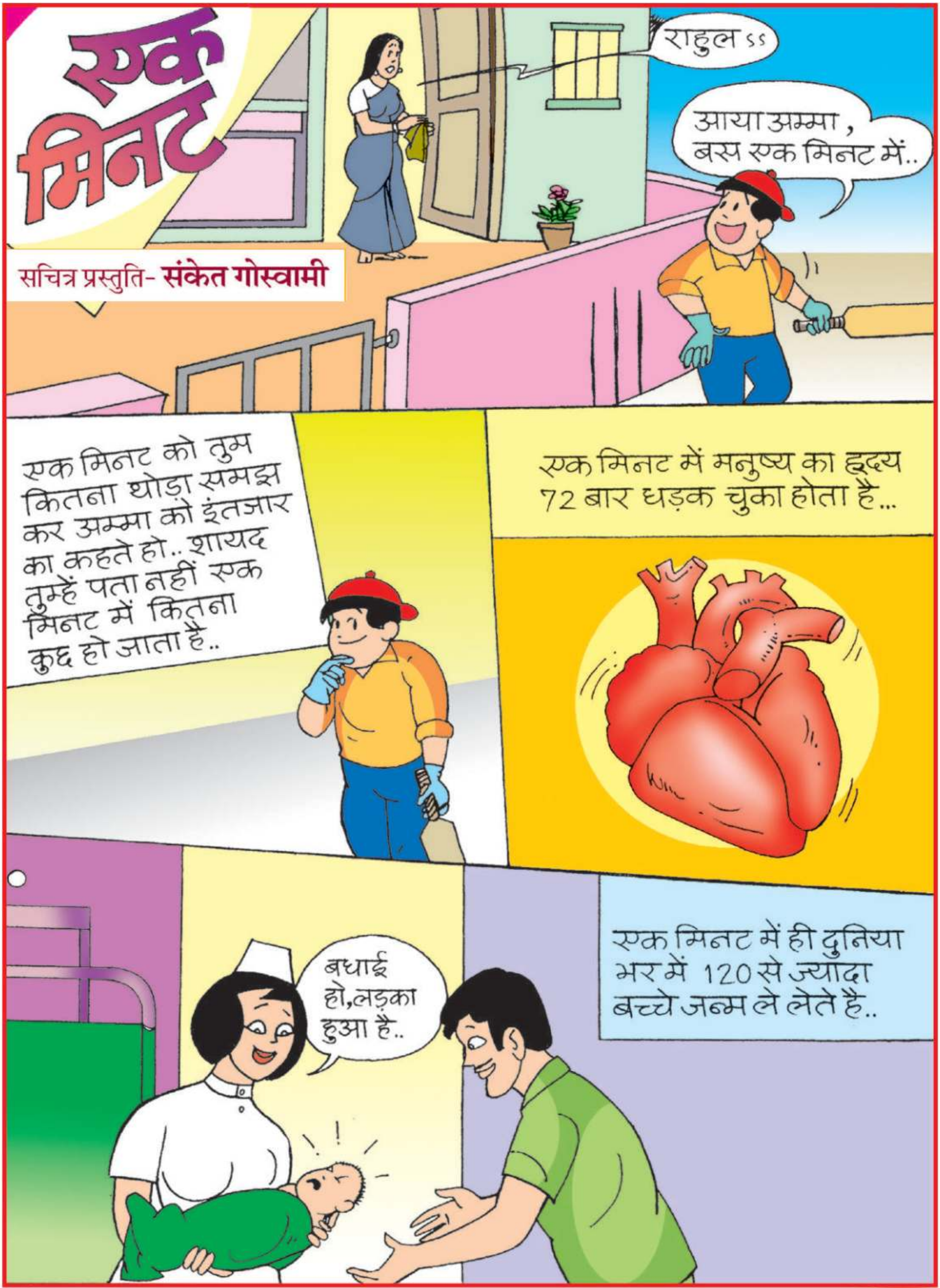
एक मिनट
सचित्र प्रस्तुति- संकेत गोस्वामी
राहुल ऽऽ
आया अम्मा, बस एक मिनट में..
एक मिनट को तुम कितना थोड़ा समझ कर अम्मा को इंतजार का कहते हो.. शायद तुम्हें पता नहीं एक मिनट में कितना कुछ हो जाता है..
एक मिनट में मनुष्य का हृदय 72 बार धड़क चुका होता है...
बधाई हो, लड़का हुआ है..
एक मिनट में ही दुनिया भर में 120 से ज्यादा बच्चे जन्म ले लेते हैं..

..सूर्य की परिक्रमा पथ पर पृथ्वी एक मिनट में 1800 किलोमीटर की दूरी तय कर चुकी होती है..
..एक मिनट में दुनिया भर में कहीं ना कहीं कुल 6000 बार बिजली चमकती है...
..प्रकाश एक मिनट में 18000000 किलोमीटर और ध्वनि 19,920 मीटर की दूरी तय कर लेते हैं..
..एक मिनट में ही घोड़ा 92 बार, गाय 20 बार, मुर्गा 50 बार, कबूतर 60 बार और चूहा 130 बार सांस ले लेते हैं..
रानू ऽऽऽ
दुनिया के सबसे व्यस्त हवाई अड्डे शिकागो शहर में..
एक मिनट में एक हवाई जहाज उड़ान भर लेता है और एक उतर जाता है...
..अब बच्चों तुम ही कहो एक मिनट क्या जरा सा समय है?

चिप्पियाँ

– निश्चल

''ये टूथब्रश अब भी यहीं रखा है। और ये... टूथपेस्ट भी हमेशा की तरह खुला पड़ा है। बाथरूम में नल फिर से खुला छोड़ दिया है। न जाने यह लड़का कब समझेगा कि अपना काम कैसे करना चाहिए। बस इसके पीछे-पीछे लगे रहो। इसे तो एक नौकर चाहिए, जो इसके छोड़े काम करता रहे।'' चिंकू की माँ नल बँद करती हुई बोलीं। पिताजी उनकी बात सुनकर मुस्कुरा रहे थे।

तभी तख्त पर बैठी चाय पीती अम्मा बोलीं– ''मैंने तो कहा है कि इसे समझाया करो। अब इतना भी छोटा नहीं रहा कि यह सब भी काम न कर पाए।''

चिंकू की यह प्रतिदिन की आदत थी। कौन-सी? अरे यही कि काम अधूरे छोड़ देना। उसे पता था कि माँ है तो सब कर देगी। वह पढ़ने के बाद कॉपी-पुस्तकें मेज पर या बिस्तर पर ही छोड़ देता। कमरे में जाता तो पंखे-लाइट चला तो लेता था, लेकिन कमरे से बाहर निकलने पर उन्हें बंद करना उसे याद नहीं रहता। टी. वी. देखने के बाद जब खेलने जाता, तब टी. वी. चलता ही छोड़ जाता। खेलकर आता तो दरवाजा में घुसते ही बैट-बॉल इधर-उधर डाल देता। वह तो उसकी माँ थी जो उसके पीछे-पीछे उसके आधे-अधूरे कामों को पूरा करती रहती। शायद इसीलिए चिंकू भी लापरवाह था। चिंकू को यूँ तो कई बार पिताजी ने समझाया। अम्मा तो हमेशा ही टोका-टोकी करती रहतीं, लेकिन चिंकू तो चिंकू ही था। उस पर कोई अंतर नहीं पड़ता था।

आज छुट्टी का दिन था। वह सुबह बाथरूम में पहुँचा। उसने टूथब्रश पर पेस्ट लगाया। उसने देखा कि टूथपेस्ट और ब्रश पर कुछ चिपका हुआ था। उसने ध्यान से देखा तो उस पर कुछ लिखा था। उसने ब्रश किया। उसने न केवल ब्रश को ठीक से धोकर सही स्थान पर रखा बल्कि टूथपेस्ट की ट्यूब को भी ठीक से ढक्कन लगाकर अलमारी में रख दिया। आज तो उसने नहाने के बाद भी पानी का नल ठीक से बंद किया। नहा-धोकर नाश्ता किया। नाश्ता करके के बाद उसने माँ के उठाने से पहले ही सारे जूठे बर्तन रसोई में स्वयं ही रख दिये। दोपहर में टी. वी. देखकर जब चिंकू पढ़ने के लिए बैठा तब उसने बिना दादी की डाँट खाए ही टी. वी. बंद कर दिया। बात यहीं नहीं रुकी। उसने पढ़ने के बाद कॉपी-पुस्तकें और खेलने के बाद बैट-बॉल सभी ठीक से रखे। माँ चकित थीं। आखिर उनका लाड़ला, लेकिन लापरवाह बेटा रातों-रात में सुधर कैसे गया।

''अरे! आज तू सब काम पूरे कर रहा है तो मुझे लगा कि संभवत: तेरी तबीयत ठीक नहीं है।'' कहकर माँ प्रसन्नताभरी दृष्टि से उसे देखने लगी।

''ऐसा कुछ नहीं है माँ! असल में, मैं आपका ही कहना मान रहा हूँ।''

''मेरा कहना.. ?''

''हाँ माँ!''

''लेकिन, मैंने तो तुझसे कुछ कहा ही नहीं।''

''अरे माँ! आपने कुछ नहीं कहा, किन्तु जगह-जगह आपकी लगाई चिप्पियों ने तो मुझसे सब कुछ कह दिया।'' ''किन्तु, मैंने तो तुझसे कुछ कहा ही नहीं।'' ''अरे माँ! आज आप मुझसे विनोद क्यों कर रही हो! चलो मैं आपको दिखाता हूँ।''

यह कहकर चिंकू ने माँ का हाथ पकड़ा और बाथरूम में ले गया। वहाँ उसने दिखाया कि टूथब्रश पर चिप्पी लगी थी जिस पर लिखा था-

''प्यारे चिंकू आज नई तुम आदत यह अपनाओ।
मुझको धोकर तुम रखो अच्छे बच्चे बन जाओ।।''

ऐसे ही टूथपेस्ट पर लगी चिप्पी पर लिखा था-

''मेरे प्यारे चिंकू बेटे!
दाँतों को चमकाओ।
ढक्कन बंद करो सही से,
खिल-खिलकर मुसकाओ।।''

पानी के नल के पास पॉलीथीन में जो चिप्पी लगी थी उस पर लिखा था-

''पानी है अनमोल इसे व्यर्थ नहीं बहाओ।
नहाने-धोने के बाद बंद करो तब जाओ।।''

नाश्ते की टेबिल पर भी जो चिप्पी लगी थी। जिस पर खाने-पीने की चीजों के चित्र भी बने थे। इस चिप्पी पर लिखा था-

''अच्छा खाना-पीना पाओ
जूठे बरतन रसोई में रखो
माँ का हाथ बँटाओ।''

टी. वी. के पास एक रंगी चिप्पी पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था-

''टी. वी. देखो मौज उड़ाओ।
बंद करो यदि बाहर जाओ।''

पढ़ाई की मेज पर आसमानी रंग की चिप्पी लगी थी। जिस पर छोटे-छोटे अक्षरों में गहरे नीले रंग से लिखा था-

''कॉपी-पुस्तक मत बिखराओ।
इन्हें समेटो जब पढ़कर जाओ।।''

अंत में चिंकू ने दिखाया यही नहीं बल्कि बल्ले पर भी चिप्पी लगी थी और उसके चारों ओर सेलो टेप लगा था। इस पर लिखा था-

''खेलो-कूदो बनो महान।
सही जगह रखो सामान।।''

सारी चिप्पियाँ दिखाते हुए चिंकू बोला, ''अब बताओ माँ, जब सभी जगह आप मुझसे चिप्पियों के द्वारा कह रहीं थीं तब मैं आपकी बात कैसे नहीं मानता!'' माँ चकित थीं कि उन्होंने तो कोई चिप्पी नहीं बनाई। अचानक उन्हें ध्यान आया कि चिंकू के पिताजी रात में कुछ पर्चियाँ-सी बनाकर उन पर कुछ लिख रहे थे। वह जब सोई थीं, तब भी वे यही काम कर रहे थे। माँ को सब समझ में आ गया था।

माँ, चिंकू को लेकर उसके पिताजी से मिलने कमरे में गई। उन्होंने देखा पिताजी तो वहाँ नहीं थे लेकिन कमरे में बड़े से कागज पर एक छोटी सी चिप्पी लगी थी। दोनों उस बड़े से कागज के पास पहुँचे। चिंकू ने पहले धीमी आवाज में पढ़ा और फिर पुन: उत्साह से जोरदार आवाज में चिप्पी पर लिखी दो पंक्तियाँ पढ़ीं-

''चिप्पी ने कर दिया कमाल।
चिंकू बन गया प्यारा लाल।।''

जैसे ही चिंकू ने **'प्यारा लाल'** कहा पीछे से तालियाँ बज उठीं। चिंकू आरै उसकी माँ ने मुड़कर पीछे देखा। वहाँ दरवाजे पर खड़े पिताजी, बाबा, अम्मा तालियाँ बजा रहे थे। चिंकू चहककर पिताजी की गोद में चढ़ गया और माँ हाथ में चिप्पियों को पकड़े कुछ सोचकर प्रसन्न हो रहीं थीं।

- अलीगढ़ (उ. प्र.)

रक्षाबंधन का त्यौहार

– भानुप्रताप सिंह

तरह–तरह की रखे मिठाई।
गद्दी में बैठे हलवाई।।
रोड किनारे ठेले चार।
राखी टंगीं कतार–कतार।।
उपहारों की अलग दुकान।
छोटे–बड़े सभी समान।।
भाई–बहिन सब रहे खरीद।
पैसे दे ले रहे रसीद।।
सजा गाँव का लघु बाजार।
रक्षाबंधन का त्यौहार।।

– सिंधाव (उ. प्र.)

रक्षाबंधन

– डॉ. हरीश निगम

मीठी–मीठी बातें करता,
घर–आँगन, खुशियों से भरता,
नेहों के गुलदस्ते धरता,
आया है रक्षाबंधन।
राखी बाँधे, सजी कलाई,
हँसते–गाते बहना–भाई,
अच्छी–अच्छी ढेर मिठाई,
लाया है रक्षाबंधन।
भरता है मन में उजियाला,
धागों का त्यौहार निराला,
हर सावन में आने वाला
भाया है रक्षाबंधन।

– सतना (म. प्र.)

बहिना की पाती

– इंद्रजीत कौशिक

कैसे राखी बाँधू भैया! तुम तो घर से दूर हो,
सीमा पर रखवाली करते तुम सैनिक मशहूर हो।
मेरी आँखें भर–भर आईं तुम जाने कब आओगे,
अपनी बहना के हाथों से जब राखी बँधवाओगे।
तुम विश्वास देशरक्षा का साहस की पहचान हो,
कह सकती हूँ बड़े गर्व से तुम ही मेरी शान हो।
याद तुम्हारी जब आती है खुद को तब समझाती हूँ,
तुम करते हो देश की रक्षा कहकर मन बहलाती हूँ।
मुझ जैसी कितनी ही बहनें गीत तुम्हारे गाती हैं,
सबसे पहले देश है भैया! राखी संदेशा लाती है।

– बीकानेर (राजस्थान)

आपकी कविता

बच्चो! ऊपर के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'रक्षाबंधन' विषय पर अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

....
....
....
....
....
....

दोस्ती

– अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'

पूजा की माँ पिछले तीन दिनों से यात्रा की तैयारी में जुटी थीं। पूजा समझ गई कि हो न हो वह दादी जी के पास गाँव जाने की तैयारी में लगी हैं। हर वर्ष गर्मियों की छुट्टी में माँ–पिताजी कुछ दिनों के लिए गाँव अवश्य जाते हैं। जब उससे न रहा गया तो आखिर उसने पूछ ही लिया– ''क्यों माँ! फिर हमें दादी जी के गाँव चलना है क्या?''

''हाँ बेटी! परसों हमें गाँव चलना है। तुम भी अपने आवश्यक सामान को एक थैले में रख लो। और हाँ, वहाँ पढ़ने के लिए कुछ पुस्तकें, कापियाँ और जो भी आवश्यक लगे रख लेना। गृहकार्य की कॉपी भी रख लो। वहाँ बैठे–बैठे अपना गृहकार्य पूरा कर लेना।'' पूजा की माँ ने कहा।

''माँ! एक बात बताइए। जब देखो तब पिताजी गाँव क्यों जाते रहते हैं?'' पूजा ने फिर प्रश्न किया।

''अरी पगली! तू इतना भी नहीं समझती? गाँव में तुम्हारे पिताजी के माता–पिता रहते हैं। उन्हीं लोगों से मिलने के लिए जाया करते हैं।'' माँ ने बताया।

''वह तो ठीक है लेकिन वे हम लोगों को साथ चलने के लिए क्यों कहते हैं। क्यों नहीं अकेले जाकर मिल आया करते?''

''क्यों? तुम्हारा वहाँ जाने का मन नहीं करता? तुम्हें वहाँ अच्छा नहीं लगता? गाँव में तुम्हारे दादा, दादी हैं, तुम्हारे चाचा–चाची हैं, उनके बच्चे यानी तुम्हारे चचेरे भाई–बहन हैं। क्या तुम्हारा उनसे मिलने का मन नहीं होता है?'' माँ ने पूछा।

''नहीं, बिल्कुल नहीं। मैं तो ऊब हो जाती हूँ गाँव में। माँ! सचमुच कितना खराब लगता है वहाँ गाँव में। न बिजली, न टी. वी. न कूलर न फ्रिज कुछ भी तो नहीं है वहाँ। हर ओर धूल, मिट्टी रहती है और गर्मी के मारे तो बुरा हाल हो जाता है।'' पूजा ने मुँह बिचका कर कहा और बाहर निकल गई।

शाम को जब पिताजी ने बताया कि उन्होंने गाँव जाने के लिए कार्यालय से दस दिनों का अवकाश ले लिया है तो पूजा परेशान हो उठी। गाँव में उसे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता क्योंकि वहाँ न तो बिजली है न टी. वी. है और न ही ऐसे मित्र जिनके साथ वह खेले या बातें कर सके। यद्यपि गाँव में उसके चाचा की एक लड़की शीला है जो लगभग पूजा की उम्र की ही है। शीला का छोटा भाई रवि भी है। मोहल्ले में शीला और रवि के हम आयु और भी कई बच्चे हैं। लेकिन वे सब पूजा को बुद्धू और गंदे लगते हैं। इसलिए पूजा उनसे हिलमिल नहीं पाती। गाँव के बच्चे भी पूजा से दूर–दूर ही रहते हैं और अपने खेलकूद में मस्त रहते हैं। इसलिए गाँव जाने पर पूजा घर में अकेली बैठी ऊबती रहती है।

पूजा ने अपनी ओर से भरपूर प्रयत्न किया कि उसे पिताजी के साथ गाँव न जाना पड़े लेकिन पिताजी ने उसकी एक न सुनी और हार कर उसे गाँव जाना ही पड़ा। लेकिन इस बार वह ऊब से बचने की पूरी तैयारी के साथ गाँव आई थी। अपने बैग में उसने ढेर सारी बाल पत्रिकाएँ तथा कविता, कहानी की कई किताबें रख ली थी। गाँव में सारे दिन अपने कमरे में बैठी वह किताबें और पत्रिकाएँ पढ़ती रहती थी। उसकी चचेरी बहन शीला जब रंगबिरंगी पत्रिकाएँ और पुस्तकें देखती तो उसका भी मन ललचाने लगता लेकिन डर और संकोच के कारण वह पूजा के पास नहीं आती थी। बस दूर से ही ताक–झाँक करती रहती थी।

एक दिन शाम के समय पूजा आँगन में लगे हैण्ड पम्प पर नहा रही थी। शीला ने देखा कि पूजा कमरे में

नहीं है और पूरे बिस्तर पर रंग-बिरंगी पुस्तकें फैल रही हैं। तो वह अपने आप को रोक नहीं सकी। वह धीरे से पूजा के कमरे में गई और उसके बिस्तर पर बैठकर एक पत्रिका पलटने लगी। उस पत्रिका की कहानियाँ और कविताएँ उसको इतनी अच्छी लगीं कि वह एक के बाद दूसरी और दूसरी के बाद तीसरी रचना पढ़ती गई। उसे समय का ध्यान ही नहीं रहा।

पत्रिका पढ़ने में मगन शीला को पता ही नहीं चला कि कब पूजा नहा-धोकर कमरे में आ गई। पूजा को एकाएक सामने देख शीला ऐसे सकपका गई मानो उसकी कोई चोरी पकड़ी गई हो। वह डर रही थी कि अपनी किताबें छूने के लिए पूजा उस पर गुस्सा होगी इसलिए अपने हाथ की पत्रिका बिस्तर पर फेंक वह तेजी से भागने लगी। किन्तु दरवाजे पर खड़ी पूजा ने लपककर उसका हाथ पकड़ लिया। शीला डर के मारे थर-थर काँपने लगी।

शीला को अपने कमरे में आया देख पूजा का मन प्रसन्न हो उठा। विशेषकर पिछले चार-दिनों से अपने कमरे में अकेली बैठी-बैठी और किताबें पढ़ते-पढ़ते वह भी ऊब चुकी थी। प्रतिदिन संध्या के समय घर के सामने खुले मैदान में गाँव के बच्चों को खेलते देखती तो उसका भी मन उनके साथ खेलने के लिए ललचाने लगता। लेकिन संकोच और अपरिचय के कारण वह मन मसोसकर रह जाती थी। वह डरती थी कि गाँव के बच्चे कहीं उसको अपने साथ खिलाने से मना न कर दें। आज शीला को अपने कमरे में देख उसके मन का संकोच जाता रहा।

''शीला! तुम्हें मेरी पुस्तकें अच्छी लगती हैं?'' पूजा ने पूछा।

''हूँ...!'' शीला ने अपनी पलकें नीचे झुकाए धीरे से कहा।

''तो आओ न... भाग कहाँ रही हो। आओ आराम से बैठकर जी भर पढ़ो।'' पूजा ने शीला का हाथ अंदर की ओर खींचते हुए कहा।

अब तो शीला के मन का भय भी दूर हो गया। वह फिर से बिस्तर पर बैठ गई और अधूरी छूट गई कहानी को पूरा करने लगी।

''शीला! क्या तुम लोग अपने साथ खेल में मुझे भी भागीदार करोगी?'' पूजा ने सकुचाते हुए पूछा।

''क्यों नहीं दीदी... हम लोगों का तो बहुत मन होता है कि तुम भी हमारे साथ खेलो लेकिन डर के मारे हम लोग तुमसे कह नहीं पाते कि पता नहीं तुम हम लोगों के साथ खेलना पसंद करो या नहीं।'' शीला ने कहा।

''शीला! सारे दिन कमरे में अकेली बैठी-बैठी मैं ऊब जाती हूँ। जी करता है तुम लोगों के साथ खेलूँ लेकिन मेरा तो यहाँ किसी से परिचय भी नहीं है और मुझे तुम लोगों के खेल भी नहीं आते।'' पूजा बोली।

''तो क्या हुआ दीदी! चलो आज ही मैं यहाँ के सभी बच्चों से आपका परिचय करा दूँगी और खेल भी सिखा दूँगी।'' शीला ने चहकते हुए कहा तो पूजा का चेहरा भी प्रसन्नता से खिल उठा।

पूजा की तो जैसे मन चाही इच्छा पूरी हो गई। थोड़ी देर के बाद घर के सामने वाले मैदान में गाँव के सारे बच्चे इकट्ठा हो गए। बच्चों का शोर सुनकर शीला भी अपने घर से निकल आई। आज उसके साथ छोटे-भाई रवि के अलावा पूजा भी थी। शीला ने अपने सभी साथियों से पूजा का परिचय कराया और

उसके बाद लुका–छिपी का खेल शुरू हो गया। कुछ देर में ही पूजा का संकोच दूर हो गया और गाँव के बच्चों के साथ वह इस प्रकार घुलमिल गई जैसे उन्हें वर्षों से जानती हो।

खेल समाप्त होने के बाद जब शीला ने सभी को बताया कि उसकी पूजा दीदी शहर से मजेदार कहानियों और कविताओं वाली ढेर सारी पुस्तकें लेकर आई है तो सारे बच्चे उसे देखने के लिए मचलने लगे।।

''भाई आज तो अब काफी रात हो गई। इसलिए आज नहीं। कल दिन में सभी लोग मेरे घर आना तो मैं तुम लोगों को अपनी किताबें दिखलाऊँगी।'' पूजा ने कहा तो सारे बच्चे अपने–अपने घर लौट गए।

अगले दिन सुबह अभी पूजा और शीला नाश्ता ही कर रही थीं कि गाँव के सारे बच्चे आ पहुँचे। शीला ने बरामदे में एक बड़ी सी चटाई बिछा दी जिस पर सभी लोग बैठ गए। पूजा अपने कमरे से पुस्तकें और पत्रिकाएँ उठा लाई। रंग–बिरंगे चित्रों वाली पुस्तकें और पत्रिकाएँ देखकर गाँव के बच्चों की खुशी का ठिकाना न रहा।

''अरी पूजा दीदी! इतनी अच्छी–अच्छी पुस्तकें तुम्हें कहाँ से मिलती हैं?'' श्वेता ने आश्चर्य से पूछा।

''यह सब पुस्तकों की दुकानों पर मिलती हैं और हमारा दैनिक समाचार–पत्र बाँटने वाला भी दे जाया करता है।'' पूजा ने बताया।

''हमारे गाँव में तो पुस्तकों की कोई दुकान ही नहीं है वरना हम लोग भी खरीदते ऐसी अच्छी–अच्छी किताबें।'' बंटी ने कहा।

''दुकान नहीं है तो क्या हुआ पत्रिकाएँ तो डाक से भी आती हैं बंटी। यह देखो, इस पत्रिका का वार्षिक शुल्क केवल साठ रुपए है। यदि एक बार साठ रुपए का धनादेश (मनी ऑर्डर) भेज दो तो वर्ष भर तक यह पत्रिका प्रत्येक महिने डाक से आती रहेगी।'' पूजा ने बताया।

''अच्छा! जैसे चिट्ठी आती है वैसे ही..?'' शीला ने प्रश्न किया। ''हाँ'' शीला! जैसे चिट्ठी आती है वैसे ही प्रत्येक महिने यह पत्रिका डाक से घर आती रहेगी।'' पूजा ने बताया।

''ऐसी बात है तो हम लोग आज ही मनी ऑर्डर से साठ रुपए भेज देंगे। यदि हम सभी बच्चे पाँच–पाँच रुपए भी चंदा कर लें तो रुपए बड़ी आसानी से एकत्र हो जायेंगे। और जब पत्रिका आयेगी तो उसे बारी–बारी सभी लोग पढ़ लेंगे। क्यों शीला कैसा रहेगा?'' बंटी ने कहा

''मैं पाँच की जगह दस रुपये चंदा दूँगी, किन्तु मेरी शर्त यह है कि पत्रिका मेरे घर के पते पर आयेगी और सबसे पहले उसे मैं पढ़ूँगी।'' मंजू बीच में ही बोल पड़ी।

''ठीक है... ठीक है.... हमें स्वीकार है।'' सभी बच्चों ने कहा और पैसे लाने के लिए अपने–अपने घरों की ओर दौड़ पड़े।

थोड़ी ही देर में साठ रुपए एकत्र हो गए। पूजा ने अपने पिताजी को सारी बात बताई तो उन्होंने बच्चों के साथ डाकघर जाकर पत्रिका के पते पर मनी ऑर्डर करा दिया। उसके बाद गाँव में पाँच दिनों का समय कैसे हँसते–खेलते बीत गया पूजा को पता ही नहीं चला। गाँव के जिन बच्चों को वह बुद्धू और गंदा समझत थी वे उसके सबसे अच्छे मित्र बन चुके थे। इस बार गाँव से वापस लौटते समय पूजा को बहुत दु:ख हो रहा था। उसे छोड़ने के लिए गाँव के बस अड्डे पर उसके बीसियों मित्र आए हुए थे। पूजा ने उनसे अगले वर्ष और भी अधिक पुस्तकें और पत्रिकाएँ लेकर गाँव आने का वचन दिया और उदास मन से बस में बैठ गई।

– लखनऊ (उ. प्र.)

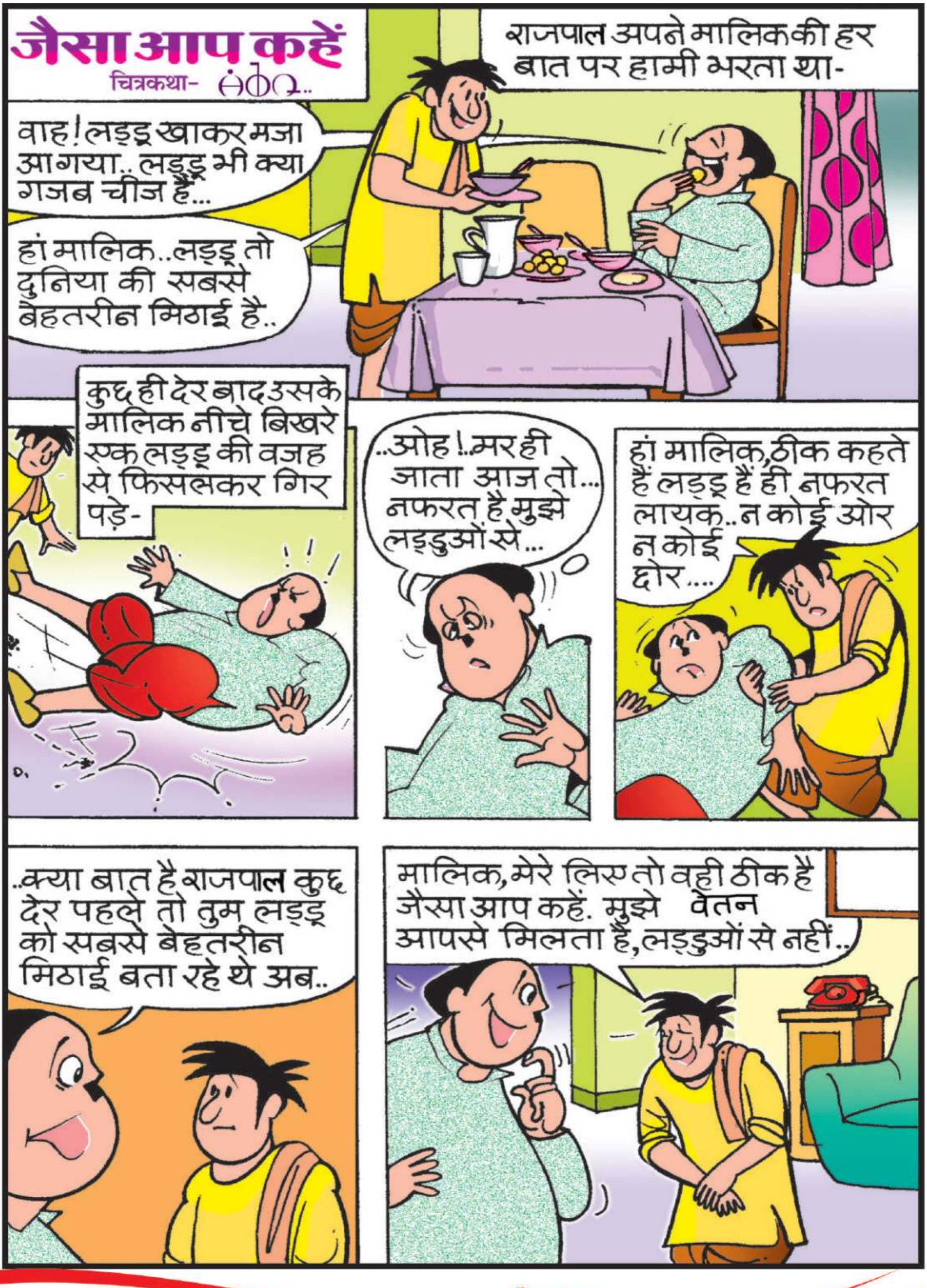
जैसा आप कहें
चित्रकथा-
राजपाल अपने मालिक की हर बात पर हामी भरता था-
वाह! लड्डू खाकर मजा आ गया.. लड्डू भी क्या गजब चीज है...
हां मालिक..लड्डू तो दुनिया की सबसे बेहतरीन मिठाई है..
कुछ ही देर बाद उसके मालिक नीचे बिखरे एक लड्डू की वजह से फिसलकर गिर पड़े-
..ओह!..मर ही जाता आज तो... नफरत है मुझे लड्डुओं से...
हां मालिक,ठीक कहते हैं लड्डू हैं ही नफरत लायक..न कोई ओर न कोई छोर....
..क्या बात है राजपाल कुछ देर पहले तो तुम लड्डू को सबसे बेहतरीन मिठाई बता रहे थे अब..
मालिक,मेरे लिए तो वही ठीक है जैसा आप कहें. मुझे वेतन आपसे मिलता है,लड्डुओं से नहीं..

पक्का वादा दादी

– नीलम राकेश

चुनमुन और रिमझिम गपागप बेसन के लड्डू खाए जा रहे थे। कल ही गाँव से दादी आई थीं और अपने साथ देसी–घी में बने सोंधे–सोंधे, बेसन के लड्डू भी लाई थीं। दादी इतने प्यार से, अपने हाथों से बना कर लाई थीं कि माँ मना भी नहीं कर पा रही थीं। शाम तक तो आधा डिब्बा लड्डू सफाचट हो चुका था।

''चुनमुन और रिमझिम कहाँ हैं?'' दादी ने लड्डू का डिब्बा खोलते हुए पूछा।

''उस कमरे में कार्टून देख रहे हैं।''

''सुनो बहू! यह डिब्बा उठाकर कहीं और रख दो। इतना बेसन खाएँगे तो बच्चों का पेट खराब हो जाएगा। मैं देख रही हूँ, तुम बच्चों को बिल्कुल नहीं टोकती हो। वह तो बच्चे हैं। सही गलत तो हमें ही बताना होगा।'' डिब्बे का ढक्कन कस कर बंद करते हुए दादी बोलीं।

''मैं तो आपके सम्मान में कुछ नहीं कह रही थी। वैसे तो मैं उन्हें मीठा खाने ही नहीं देती हूँ।'' माँ के चेहरे पर आश्चर्य पसरा हुआ था।

''अरे! यह क्या बात हुई? बच्चे हैं, अभी मीठा नहीं खाएँगे तो कब खाएँगे?''

''आपकी बात सही है माँ जी! पर मैं क्या करूँ, इन दोनों को मीठा इतना पसंद हैं कि जितना भी दे दो कम है। मीठा खा–खाकर दाँत खराब कर लिया। चुनमुन के तो दो दाँतों में कीड़ा लग गया है।''

''अरे! अभी से?'' दादी के स्वर में आश्चर्य था।

''हाँ माँ जी! मैं बहुत परेशान हूँ। पर ये दोनों सुनते ही नहीं है।'' माँ ने अपनी परेशानी बताई।

''तुम चिंता बिल्कुल मत करो बहू! मैं समझा दूँगी।'' कह कर दादी विचार मग्न हो गईं।

कार्टून समाप्त होने ही दोनों भोजन की मेज पर आकर लड्डू का डिब्बा ढूँढ़ने लगे। और उसे गायब देखकर दोनों ने एक–दूसरे की ओर देखा फिर दौड़ कर सीधे दादी के पास पहुँच गए।

''दादी, दादी! माँ ने हमारा लड्डू कहीं छुपा दिया है।''

''माँ ने नहीं मैंने रखवाया है।'' दादी बोलीं।

''लेकिन क्यों? आप तो कह रही थीं कि वो हमारे लिए है।'' दोनों ने आश्चर्य से पूछा।

''बिल्कुल सही। तुम्हारे लिए ही है। लेकिन हर चीज को किसी हिसाब से खाया जाता है। अधिक बेसन नुकसान करता है। पेट खराब हो सकता है।'' दादी ने समझाया।

''मेरे पेट में तो गुड़–गुड़ हो रहा है।'' रिमझिम सिर झुकाकर बोली।

''पर मेरा पेट तो बिल्कुल ठीक है। मुझे लड्डू दे दीजिए।'' चुनमुन बोला।

''अच्छा पहले मेरे एक प्रश्न का उत्तर दो फिर मैं दो लड्डू दूँगी।'' दादी मुस्कुरा कर बोलीं।

''हाँ पूछिए।''

''तुम अपने दाँत किसके जैसे चाहते हो?''

अभी चुनमुन सोच ही रहा था कि रिमझिम बोली– ''दादी! आपके जैसा, आपके दाँत एकदम बराबर–बराबर मोती जैसे हैं।''

''हाँ, हाँ, दादी मुझे भी आपके जैसे ही दाँत चाहिए।'' चुनमुन जल्दी से बोला।

दादी हँसते हुए बोलीं– ''मेरे जैसे? मेरे तो बहुत बेकार हैं।''

''अरे!!!'' आश्चर्य से दोनों बोले।

''पर आपके दाँत को बहुत सुंदर हैं।'' रिमझिम ने दोहराया।

''यह देखो-'' कहते हुए दादी ने अपनी बत्तीसी निकालकर हाथ में ले ली।

दोनों आश्चर्य से दादी को देखते रह गए। फिर चुनमुन खिलखिला कर हँसने लगा। वो एकटक दादी के पोपले मुँह को देख रहा था।

''दादी, बिना दाँतों के आप कितनी मजेदार लग रही हैं।'' चुनमुन बोला।

''हाँ, देखने में अजीब और खाने में बहुत ही अधिक दिक्कत। बिना दाँतों के कुछ भी नहीं खा सकते।'' वापस अपने दाँत लगाकर दादी बोलीं।

''नकली दाँत से तो खा पाती हैं आप?'' चिंतित सी रिमझिम बोली।

''हाँ, केवल मुलायम चीजें खा पाती हूँ।''

आपके सारे दाँत कैसे टूट गये दादी?'' रिमझिम का अगला प्रश्न था।

''मैं ना, बचपन में बहुत शैतान थी। मुझे मीठा बहुत पसंद था। मेरी माँ, जो भी मीठा बनाती मैं सारा खा जाती। माँ मुझे बहुत समझाती, ब्रश करने को कहती। पर मैं एक कान से सुनकर-दूसरे कान से निकाल देती। बस कीड़े समझ गए कि यही सही घर है उनके लिए और आ गए मेरे दाँतों में। एक से शुरू हुए और धीरे-धीरे करके सारे में फैल गये।''

''फिर?''

''फिर क्या, फिर कोई दूसरा रास्ता ही नहीं बचा। इतना दर्द था कि दाँत उखड़वाने ही पड़े।'' दादी अपने गालों को सहलाते हुए बोलीं।

''दादी! मुझे अपने दाँत नहीं उखड़वाने।'' डरा-डरा सा चुनमुन बोला।

''पर तेरे दाँत में तो कीड़ा लगना शुरू हो गया है। अब क्या होगा?'' रिमझिम चिंतित सी बोली।

''दादी! अब मैं क्या करूँ?'' चुनमुन ने दादी का हाथ पकड़कर पूछा।

''चुनमुन! तुम्हारे दाँत को बचाया जा सकता है।''

''कैसे?'' दोनों बच्चे एक साथ बोले।

''सुबह, शाम, दोनों समय ब्रश करो जैसे तुम्हारे पिताजी करते हैं। और जितनी भी बार कुछ खाओ अच्छी तरह से पानी से कुल्ला करो। सुबह शाम दोनों समय (मुख धावन) माउथवॉश से अच्छी तरह कुल्ला करो। तुम्हारी माँ जो बताती है उसका पालन करो। बस तुम्हारे दाँत हमेशा तुम्हारे साथ रहेंगे।'' प्यार से दादी बोलीं।

''पर यह जो कीड़ा लग गया है उसका क्या?'' रिमझिम ने पूछा।

''यह तो इसके दूध के दाँत हैं। गिर जाएँगे फिर नए आ जाएँगे। चिंता मत करो। बस आज से ही इन बातों का ध्यान रखना शुरू कर दो।'' प्रसन्नता से दादी बोलीं।

''पक्का वादा दादी! अपने दाँतों का हम आज से ही पूरा ध्यान रखेंगे।'' कहते हुए दोनों दादी के गले लग गए।

- लखनऊ (उ. प्र.)

बड़े लोगों के हास्य प्रसंग

आजादी की लड़ाई में गाँधीजी का नमक सत्याग्रह भी एक महत्वपूर्ण आन्दोलन था प्रसिद्ध दाण्डी यात्रा (१९३०) इन्हीं का एक भाग थी। इस आन्दोलन में कई लोग गाँधीजी के अनुयायी के रूप में सम्मिलित हुए। गाँधीजी का आह्वान था– ''जहाँ भी खारा पानी मिले उससे नमक बनाओ और कलेक्टर को खुली चुनौती दो।''

इन सत्याग्रहियों में एक थे **श्री. महावीर त्यागी**। देहरादून की ओर कहीं के रहने वाले श्री त्यागी ने खारे पानी के एक झरने का जल उपयोग कर नमक बनाया और दूसरे ही दिन साथियों के साथ बंदी भी बना लिए गए। पं. बेनीप्रसाद डिप्टी कलेक्टर थे। उनके सामने प्रकरण प्रस्तुत हुआ। गवाहों के बयान हो चुके तो त्यागी जी बोले– ''यह तो सिद्ध नहीं हुआ कि हमारी पुड़ियाओं में नमक था फिटकरी या चूना।'' डिप्टी कलेक्टर बोले– ''यह सबूत की कमी है क्या अदालत इसे चखकर देख सकती है?''

त्यागीजी ने पुड़िया आगे कर दी। डिप्टी कलेक्टर ने चखा और हँसकर बोले– ''यह तो नमक ही है।'' त्यागी जी बोले– ''अब आप दण्ड सुना दीजिए क्योंकि अभी तक आप अंग्रेजों का नमक खाते थे अब आपने गाँधी का नमक भी खाया है बस याद रखिए।'' पं. बेनीप्रसाद की गर्दन झुक गई वे उसी दिन से लम्बी छुट्टी पर चले गए और जब लौटे तो सेवानिवृत्ति ले ली।

–

'अमृतलाल नागर बालकथा सम्मान' से सम्मानित डॉ. दयाराम मौर्य 'रत्न'

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा बाल साहित्य में उल्लेखनीय कार्य– उपलब्धियों के लिए प्रतापगढ़ (उत्तर प्रदेश) के बालकथा सम्मान २०१९ से सम्मानित किया गया। यह प्रतिष्ठित सम्मान डॉ. रत्न को संस्थान के यशपाल सभागार में उत्तरप्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष माननीय हृदय नारायण दीक्षित के कर कमलों से प्राप्त हुआ। सम्मान समारोह २८ फरवरी २०२१ को हुआ, जिसकी अध्यक्षता संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्ता ने की। पुरस्कार वितरण समारोह में संस्थान के निदेशक श्रीकान्त मिश्र उपस्थित रहे। संचालन संस्थान द्वारा प्रकाशित बाल द्विमासिक पत्रिका **'बालवाणी'** के सम्पादक डॉ. अमिता दुबे ने किया।

इसके पूर्व भी संस्थान द्वारा डॉ. दयाराम मौर्य 'रत्न' को उत्कृष्ट काव्य–सृजन हेतु **'अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' सर्जना पुरस्कार'** से अलंकृत किया जा चुका है। डॉ. रत्न हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी नई दिल्ली द्वारा **'हिन्दुस्तानी भाषा काव्य प्रतिभा सम्मान'** से अलंकृत किए जा चुके हैं।

कमलेश शंकर नहीं रहीं

बालसाहित्य के सिद्ध रचनाकार स्व. श्री शंकर सुलतानपुरी की जीवनसंगिनी एवं बालसाहित्य की रचनाकार **श्रीमती कमलेश शंकर** का प्रयागराज में देहावसान हो गया। **देवपुत्र** परिवार उनके प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

ढीठ धूप

– नीलू सोनी

''जाओ बेटा हवन के लिये धूप ले जाओ।'' माँ के इस कथन ने, मुझसे न जाने कितना धूप खिंचवाई! हाँ, हाँ, मैं सच कह रही हूँ। उस दिन पाँच बरस की छोटी ने अपनी पूरी शक्ति से धूप को खींच कर, ढकेलकर, मुट्ठी में भरकर तो, कभी डिब्बे में भरकर; हर युक्ति से धूप को छाँव में लाने का प्रयास किया। लेकिन धूप तो अजीब उज्जड़–ढीठ निकली टस–से–मस न हुई। यहाँ तो पूजा भी समाप्त हो गई और ढलती संध्या धूप भी निकल भागी। शायद, मेरी हरकतों से परेशान हो गई थी। पर, उस दिन बाल मन ने ये मान लिया था, कि धूप सुनहरी नहीं बल्कि ढीठ होती है।

धूप में मेरा रिश्ता ऐसा था कि कभी–कभी तो लगता, मानो मेरे जीवन के सारे भूचाल धूप ने ही लाये हैं।

सण्डे की छुट्टी तो धूप के हवाले हो ही चुकी थी। भले ही छुट्टी हो पर मैं... मैं कभी देर तक न सो पाई, जानते हैं क्यों? क्योंकि दादी पहले ही शुरू हो जाती, ''धूप सिर चढ़ आई पर महारानी अभी तक सोई है।''

कभी जो मैं कमजोर इम्युनिटी से बीमार भी पड़ी, तो एक ही घिसा–पिटा तर्क मिलता कि, ''कभी हवा–धूप लगे तन में तो सेहत बने तुम्हारी।'' और गर्मी..... में तो सारे तर्क ही उल्टे पड़ जाते थे। तब तो, तर्क होता था कि, – ''खड़ी दुपहरी बाहर मत जाना, जो धूप ने रंग में कुछ ऊँच–नीच कर दी तो कौन पसंद करेगा कल को।''

ओह!.... धूप, धूप, धूप.......

जाने, धूप की क्या दुश्मनी आन पड़ी थी मुझसे।

पर समय और स्वभाव बदलते देर नहीं लगती।

मैंने मन चाहे व्यापार में हाथ क्या डाला, व्यापार बढ़ता ही गया और ऐसा बढ़ा भी तो क्या की आज भी मैं धूप पर ही अटकी हूँ बस स्थितियाँ कुछ विपरीत होती जा रही है।

मेरी कम्पनी में आज धूप से बचाव के सारे उत्पादन, सर की टोपी से लेकर पैर के जूते–चप्पल तक बनते हैं। और हाँ, आज.... आज तो गजब ही हो गया। जानते हैं मेरा नया प्रकल्प क्या है? इस नये प्रकल्प ने तो, आखिर ढीठ धूप को भर ही लिया डिब्बे में और शायद, इस नए प्रकल्प से कुछ कम भी हो जाए हमारी दुश्मनी, या शायद और बढ़ भी जाए। खैर, हमारी दुश्मनी का तो मैं नहीं जानती। पर, आज कुछ और अवश्य जान गई हूँ कि धूप जब सोलर पैनल में बन्द होकर लैम्प से बाहर निकलती है, तो बहुत सुनहरी दिखती है। सच में, धूप केवल ढीठ ही नहीं बल्कि सुनहरी भी होती है।

– शहडोल (म. प्र.)

घास की आत्मकथा

– रामगोपाल 'राही'

बच्चो का उद्यान उसमें बच्चे खेलने आए हुए थे। कोई चकरी पर बैठ घूमने लगा। कोई झूला–झूलने लगा, कुछ बच्चे झूले के पास लगी बैंच पर बैठ गए। कुछ बच्चे रिसकनी (फिसलपट्टी) पर हँस–हँस फिसल रहे थे।

बरसात के दिन थे दरवाजा खुला रह गया। यह देख दो गाय, बछड़े, बैल भैंस बछिया, सांड आदि पशु उद्यान के अंदर चले आए। बरसात के कारण से उद्यान में बड़ी–बड़ी घास उगी थी। बड़ी–बड़ी उगी हुई घास गाय–भैंस आदि तन्मयता से चरने लगे।

तभी बैंच पर बैठे बच्चों ने पीछे देखा। घास चर रहे गाय बछड़े बछिया भैंस के घास चरने से घस घस घस की आवाज हो रही थी। आवाज सुन। बच्चों का ध्यान पशुओं के चरने से घस घस हो रही आवाज की ओर गया। बच्चे ही तो ठहरे, घस घस सुन हँस–हँस कर स्वयं भी घस घस बोलते रहे। मस्ती में हँसते रहे बार–बार में यही बोलते रहे, इतने में अदृश्य घास स्वयं बोली, सुन उद्यान के सारे बच्चे एकत्रित हो गए।

घास भी स्वयं घस घस घस बोलने लगी।

बच्चों ने सुना चौंके इधर–उधर देखा आपस में बोले– ''कौन बोल रहा है, यह आवाज कहाँ से आ रही है?'' इतने में घास फिर बोली– ''बच्चो! जानते हो इस घस घस घस से ही मेरा नाम घास पड़ा है।'' आवाज सुन बच्चे फिर इधर–उधर देखने लगे और बोले– ''घास बोल रही हो?'' उत्तर मिला– ''हाँ, मैं घास बोल रही हूँ।'' सुन बच्चे बोले– ''घास को तो यह पशु खा रहे हैं।''

सुन घास ने कहा– ''हाँ, पालतू पशुओं के खाने के काम ही आती हूँ मैं।''

अदृश्य आवाज के प्रति बच्चे उत्सुकता से उसे सुनते रहे। घास बोलती रही– ''मानव जीवन का आधार घास ही है। फिर कहा अन्न का आधार घास ही होती है।'' घास ने फिर कहा– ''आप सब तृण समझ घास की उपेक्षा कर फेंक देते हो।''

घास की बात सुन बच्चों ने फिर उत्सुकता से पूछा– ''तुम धरती पर कैसे आ जाती हो?''

बच्चे घास की बात सुनने को उत्सुक थे।

बच्चों ने अपनी बात दोहराते हुए कहा– ''तुम धरती पर कब से हो?''

घास ने कहा– ''जब से सृष्टि है तभी से हूँ।''

घास ने अपने विस्तार की बात समझाते हुए बताया– ''दुनिया में मेरे घास के बड़े–बड़े मैदान हैं।'' फिर समझाते हुए बताया– ''मुझे अंग्रेजी में ग्रास, लैटिन में ग्रेमेन कहते हैं।'' बच्चे सुन आश्चर्य करने लगे अरे घास अंग्रेजी भी जानती है?

घास बोली– ''मैं एक पत्ती घास हूँ, जिसमें एक दल होता है।'' फिर कहा– ''सबसे पहले धरती पर मैं ही आई, उगी थी। हरी–भरी होने से धरती की सुंदरता बढ़ी जानते हो मेरे साथ ही पेड़–पौधे आए साथ में अपने हवा लाए। जिससे धरती सुंदर और सार्थक हो गयी, इसी क्रम में घास खाने वाले जीवों की

उत्पत्ति हुई।'' घास ने आगे कहा– ''मेरे दुनिया में काफी मैदानी जंगल हैं।''

इस पर कुछ बच्चे सोचकर बोले– ''दुनिया में तुम्हारे इतने बड़े जंगल है, मैदान है तो फिर घास का और भी उपयोग होता होगा?''

इस पर घास ने प्रसन्न होकर कहा– ''तुम ठीक कहते हो।'' घास फिर बोली– ''मैं अपने बारे में तुम्हें और भी बहुत सारी जानकारी देती हूँ।''

''सुनो! मैं कभी भी बिना हिचकिचाहट के निर्भयता से हर कहीं उग आती हूँ। मैं धरती की हरी और सुनहरी चुनरिया हूँ। मेरे उगते ही धरती पर हरियाली हो जाती है। एक बड़ी बात सृष्टि में जीव–जगत में आशा–विश्वास की जनक अंकुरित हरे रंग की घास ही होती है।''

फिर कहा– ''गेहूँ, जौ, बाजरा, मक्का, ज्वार सभी अन्न के दाने मुझ घास में ही लिपटे होते हैं।''

अन्न के बारे में घास ने बड़ी प्रेरक अतीत की बात बताई। कहा– ''उपनिषद् में कथन है **'कस्माद भूतानि जायन्ते'** अर्थात विश्व किस वस्तु से उत्पन्न हुआ? उत्तर भी उसी में लिखा है। **'अन्नाद भूतानि जायन्ते'** अर्थात यह जगत अन्न से उत्पन्न हुआ। अन्न से जीवन, द्रव्य बनता है, जिससे शरीर चलता है।''

साथ ही कहा– **''अन्नं वै प्राणा:''** घास ने श्लोक सुनाते हुए कहा–

अन्नेन रक्षितो देहं, देहेन प्राणस्तथा,
प्राणेन रक्षितो धर्म: अन्नं रक्षति सर्वहि।।

का अर्थ बता अपनी बात आगे बढ़ाते हुए घास ने कहा– ''तरह–तरह की सभी घास गैसिनी कुल के अंतर्गत ही आती हैं और जानते हो गन्ना (ईख) यहाँ तक की बाँस भी घास ही है।''

बच्चे घास की बात सुन और भी उत्सुकता से सुनने लगे। आपस में सोच–विचार कर कहने लगे– ''घास तो बड़े ज्ञान की बात कर रही है।''

घास ने फिर अपनी कहानी आगे बताई बोली– ''बच्चों मैं तृण अवश्य हूँ, किन्तु मेरा समाज व मानव जीवन में बहुत महत्व है।'' फिर कहा– ''पूजा अनुष्ठान में दूर्वा, द्रोब ही रखी जाती है।'' फिर बोली– ''तुमने देखा होगा मैं सूखी या पुआल भूसी के रूप में पालतू पशुओं का आहार हूँ। जिसे खा पालतू पशु दूध देते हैं, जिससे सुबह–सुबह आपके घरों में चाय बनती है। पशुओं का चारा मेरी बालियों से ही होता है। इससे भूसा बनता है। खाद में काम आने लगी हूँ। मेरे हरे भरे रहने से आसपास उद्यान बहुत मनोरम और उपयोगी होते हैं। हरी घास पर लेट सारी व्यथा भूल जाते हैं। बहुत शीतल होती हूँ मैं। लॉन में मेरा उपयोग सभी जानते हैं। रात को ओस के मोती मुझ पर गिर चमकते हैं सबको प्यारे लगते हैं। सुबह–सुबह मुझ पर नँगे पाँव घूमने वालों के नेत्र रोग ठीक कर देती हूँ मैं! घास यहीं नहीं रुकी कहा जानते हो दुनिया में मेरे बड़े–बड़े मैदान है कहा–उत्तरी अमेरिका में प्रेयरीज, दक्षिणी अमेरिका में पेन्मया, ऑस्ट्रेलिया के डाऊन, दक्षिणी अफ्रीका के सवन्ना बैड मेरे प्रसिद्ध मैदान हैं।''

अब घास की बात सुन बच्चे बोले– ''हम जाएँगे, जल्दी–जल्दी बताओ तुम्हारे और क्या–

क्या उपयोग है?''

अब घास जल्दी-जल्दी बोलने लगी- ''कई मैदानों में बड़ी-बड़ी उगती हूँ। लम्बी घास को कागज की लुगदी के लिए उगाया जाता है। घास कई तरह की होती है, मैं जिंजर घास, लेमन घास, तेलीय घास। घास से सुगंधित तेल निकाले जाते हैं। कपूर घास उत्तम प्रकार की होने से, घास से पहले जनेऊ भी बनती थी।''

बच्चों को याद दिलाया- ''हनुमान चालीसा मैं हनुमान जी ने **'कांधे मूंज जनेऊ साजे'** की बात आयी है। मूँज घास के तने का निचला भाग सरकंडा से सेंठा, कुर्सी, मुड्डे (मोढ़े), मेज, टोकरी, पर्दे, चिक, कलम आदि बनते हैं। घास छप्पर छाने में भी काम आती है। विशेष बात बताऊँ खस घास की जड़ से सुगंधित इत्र बनता है।'' सुन बच्चे बोले- ''यह इत्र क्या होता है? घास ने कहा सुगंधित तेल जैसा ही होता है। खस इत्र तो बनता ही हैं साथ ही चिक, पंखे, टोकरी व ढक्कन बनते हैं। सुगंधित साबुन बनते हैं। घास बीज से लाल रंग का तेल निकलता है जो भी इत्र बनाने के काम आता है।'' अपनी उपयोगिता के अंत में कहा- ''घास अगर नहीं हो मानव जीवन दूभर हो जाए। पालतू दूध देने वाले बोझा ढोने वाले पशु जिंदा भी नहीं रहें। घास भूसी, के रूप में दूध देने वाले गाड़ियाँ खींचने वाले पशुओं के जीवन का आधार हूँ, और सबसे बड़ी राज की बात भी सुन लो मैं घास तृण अवश्य हूँ, पर पर्यावरण पोषक हूँ। पर्यावरण को समृद्ध बनाती हूँ।''

सुन बच्चों ने कहा- ''यह तो बढ़िया बात है, घास हो पर सचमुच बहुत उपयोगी हो।''

बच्चों में जिज्ञासा थी सोच रहे थे कुछ और सुनें पर... अब घास की आवाज नहीं आ रही थी। बच्चों ने पलट जो देखा घास चर रही गाय, भैंस, बैल, बछड़ा, बछिया सभी तृप्त अर्थात भर पेट घास चर चले गए थे, उन्हीं के साथ बोलती हुई घास की आवाज बंद हो गई। बच्चे असमंजस में ही रहे।

बच्चे ठहरे इधर-उधर देखने लगे आपस में कहने लगे। घास बोलते-बोलते पल भर में कहाँ, किधर चली गई।

- बूँदी (राजस्थान)

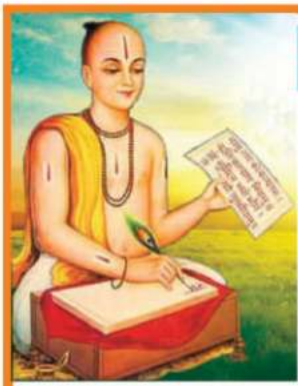

तुलसी जयंती : श्रावणशुक्ल ७

तुलसी बाबा

- प्रो. श्रीकृष्ण 'सरल'

हे रामकथा के राजहंस तुलसी बाबा!
सच पूछो तो तुमने ही हमको राम दिया,
वह राम रम गया जो भारत के जीवन में
वह राम दिया, उसका प्रिय पावन नाम दिया।।
वह रामकथा जो विद्वानों तक सीमित थी,
तुलसी बाबा! तुमने जन-जन तक पहुँचाई।
यह लगा, तारने हमको, कल्मष धोने,
उस रामकथा की सुरसरि घर-घर तक आई।।
दे रामचरित मानस भारत की धरती को,
सच है तुमने हमको पहचान हमारी दी।
दे रामचरित मानस या रामायण हमको,
जग के लोगों को तुमने शान हमारी दी।।
जो कुछ तुमने लिखा, लिखा वह शाश्वत ही,
भारत की संस्कृति का उसने निर्माण किया।
चेतना और जागृति का शंखनाद करके,
कुटियों, महलों, जन-जन का है कल्याण किया।।
हे पुण्य पुरुष! यह देन तुम्हारी ही हमको,
हम सब लोगों पर यह आभार तुम्हारा है।
हम भारतवासी हैं चिर ऋणी तुम्हारे प्रति,
सचमुच ही हम पर यह उपकार तुम्हारा है।।

- उज्जैन (म. प्र.)

दादी ने दिमाग दौड़ाया

– रावेन्द्र कुमार 'रवि', खटीमा (उत्तराखण्ड)

जन्म–दिवस पर नया–नया,
एक पजामा सिला गया!
उसका रंग सफेद झकाझक,
कपड़ा बिल्कुल था सूती।
उसके साथ पहनने लाए,
वे राजस्थानी जूती!
लेकिन जब पहना भैया ने,
वह धीरे से सरक गया!
दोनों हाथ पकड़ झट रोका,
देखा गायब था नाड़ा!
जल्दीबाजी के चक्कर में,
भूला दर्जी बेचारा!
अब क्या होगा, सोच रहे हैं;
दर्जी नैनीताल गया!
जब दादी माँ ने यह पूछा,
''मुँह क्यों तुमने लटकाया?''
''बिन नाड़े के पहन न पाऊँ,
नया पजामा!'' – बतलाया!
दादी ने दिमाग दौड़ाया,
जो बक्से तक चला गया!
बक्से से फिर एक पुराना,
ढूँढा दादी ने नाड़ा!
बोलीं, ''जरा पेन भी लाओ,
ढूँढो चाहे घर सारा!''
फिर दादी का गजब तरीका,
जादू अपना चला गया!
अब तो भैया हुए बहुत खुश,
दादी माँ के लगे गले!
कस नाड़े से पहन पजामा,
वे बाहर खेलने चले!
बोलीं दादी, ''जरा सँभलकर!''
उनका चेहरा दमक गया!

किससे सीखा है ?

– पवित्रा अग्रवाल

पिताजी घर आये तो श्लोक अपनी दादी के साथ नृत्य का कोई कार्यक्रम देख रहा था। यह देखते ही उनका पारा ऊपर चढ़ गया। ''यह सब क्या हो रहा है, पढ़ाई हो गई ?''

''अभी नहीं की, पर हो जायेगी पिताजी!''

''इस सब में समय बर्बाद कर रहे हो ? माँ उसे तो बुद्धि नहीं है पर आपको भी समझ नहीं है क्या ? कुछ तो सोचना चाहिए। यह आयु कैरियर बनाने की है। हम तो उसे टीवी भी नहीं देखने देते। आप जानती हैं न कितनी प्रतियोगिता है आज कल ?''

हमेशा की तरह दादी ने कुछ कहना चाहा पर पिताजी ने पहले ही कह दिया– ''मुझे कुछ नहीं सुनना, मैं कोई तर्क–वितर्क नहीं करना चाहता।'' दादी आँखों में आँसू लिए अपने कमरे में चली गईं पर श्लोक को पिताजी का दादी से इस प्रकार का व्यवहार अच्छा नहीं लगा। वह दादी का बचाव करते हुए बोला– ''पिताजी! इसमें दादी की कोई चूक नहीं है। शाला में मेरे कई मित्र इस कार्यक्रम की बहुत प्रशंसा कर रहे थे। उन्होंने बताया था कि यह फिर से भी दिखाया जाता है। मैं इसे देखना चाहता था तो मैंने दादी को भी बुला लिया। फिर हर समय मैं पढ़ नहीं सकता पिताजी मुझे भी थोड़ा मनोरंजन चाहिए।''

आँखों में आँखें डालकर श्लोक का इस प्रकार बोलना पिताजी को अच्छा तो नहीं लगा पर वह उस समय टीवी बंद करके अपने कमरे में चला गया।

एक दिन दादी बीमार थीं। माँ ने श्लोक को उनके पास जाने से मना कर दिया था। उसने पूछा– ''माँ! दादी बीमार हैं तो मैं उनके पास क्यों नहीं जा सकता ?''

''बेटा! समझा करो तुम भी उस बीमारी से संक्रमित हो सकते हो।''

''पर माँ! बीमार तो आप और पिताजी भी होते हैं तब तो आपने मुझे अपने पास आने से कभी नहीं रोका।''

''श्लोक! आजकल तू बहुत तर्क करने लगा है, यह सब कहाँ से सीख रहा है ?''

पिताजी के आते ही माँ ने कहा– ''सुनो, आजकल श्लोक बहुत तर्क करने लगा है। दादी के पास ही घुसा रहता है। मेरी तो सुनता ही नहीं। उस पर क्रोध करती हूँ तो तुम्हारी माँ बचाने आ जाती है।''

''हर समय शिकायत, तुम क्या चाहती हो ?''

ऐसे ही एक दिन दादी को दवाई का डिब्बा नहीं मिल रहा था। दादी ने श्लोक से ढूँढने को कहा। पिताजी ने सुन लिया। टीवी के पास से उठाकर झुँझलाते हुए माँ को देते हुए बोले– ''आप ठीक से देखती क्यों नहीं ? सामने ही तो रखा है।''

दादी के दिन–प्रतिदिन अपमान से श्लोक गुस्से से भरा बैठा था। पिताजी को कार्यालय जाते समय कार की चाबी नहीं मिली तो वह शोर मचाने लगे– ''श्लोक

मुझे देर हो रही है, जल्दी से कार की चाबी ढूँढकर दे।'' माँ भी ढूँढने लगीं।

खाने की मेज पर से चाबी उठाते हुए श्लोक ने कहा– ''सबको दिखाई देना कम हो गया है क्या? जो सामने रखी चाबी नहीं दिख रही?''

पिताजी क्रोध में उसे दो चाँटे मारते हुए चिल्लाये– ''इस गँवार का घर से बाहर खेलने जाना बंद करो। देखा, अपने पिता से कैसे बोल रहा है। क्यों रे! कहाँ से सीखा यह सब?''

''आप ही विचार कीजिए पिताजी! मैंने कहाँ से सीखा होगा? आप और माँ जब प्रतिदिन इसी प्रकार दादी से बोलते हैं तो मुझे बहुत बुरा लगता है, दादी भी तो आपकी माँ हैं।'' एकदम से घर में सन्नाटा छा गया।

माँ दादी को घूरते हुए बोलीं– '''अवश्य ही यही हमारे बच्चे को हमारे विरुद्ध भड़का रही हैं।''

पिताजी बिना कुछ कहे कार्यालय चले गए। संध्या तक दादी ने हठ पकड़ ली कि मुझे आज ही गाँव छोड़ आओ। पर दादी की जानकारी के बिना गाँव का मकान तो बेचा जा चुका था।

माँ की राय पर दादी को शहर के वृद्धाश्रम में भेज दिया गया, वह चुपचाप जाते देखता रहा।

श्लोक आहत था। खाना–पीना उसने कम कर दिया था। पढ़ने में भी उसका मन नहीं लगता था। अंक भी बहुत कम आ रहे थे।

उसकी कक्षा शिक्षिका ने श्लोक को बुलाया खूब प्यार किया और उससे जानना चाहा कि उसे क्या हो गया है? इतना चुप–चुप वह क्यों रहने लगा है। शाला में होने वाली गतिविधियों में वह अब भाग क्यों नहीं लेता। पढ़ाई में भी पिछड़ रहा है?

शिक्षिका की सहानुभूति और स्नेह के आगे वह एकदम से फूट पड़ा– ''हमारी दादी हमारे साथ थीं, माँ–पिताजी तो काम में व्यस्त हैं पर शाला से लौटने पर मुझे घर खुला हुआ मिलता था। वह मेरा बहुत ध्यान रखती थी। पर माँ–पिताजी छोटी–छोटी बातों पर उन पर गुस्सा करते रहते थे। मेरी किसी कमी के लिए भी दादी को ही दोष देते थे। दादी बहुत रोती थीं, अब तो वह वृद्धाश्रम में रहती है पर मैं क्या करूँ? अपना घर होते हुए भी दादी अनजान लोगों के बीच रहती हैं...''

शिक्षिका ने प्यार से श्लोक को बहुत समझाया और कक्षा में जाने को कहा फिर उसके माता–पिता को फोन कर विद्यालय बुलाया। श्लोक की गिरती स्थिति और उदासियों का कारण जानना चाहा। तो माँ बोलीं हम भी यहीं देखकर परेशान हैं। घर में भी चुप–चुप रहता है, ढंग से खाता–पिता भी नहीं है, पढ़ने–लिखने को कहो तो उसे बहुत क्रोध आता है।''

''आपने जानने का प्रयत्न नहीं किया? उसके इस व्यवहार का कुछ कारण तो अवश्य होगा? अवश्य ही घर में ऐसा कुछ घटा है जिससे वह बहुत आहत हुआ है।''

''जी, पहले मेरी माँ हमारे साथ रहती थीं, वह उनसे बहुत ही घुला–मिला हुआ था पर...''

''हाँ दीदी! पर उनका मन यहाँ नहीं लगता था तो वह गाँव चली गईं।''

''गाँव या वृद्धाश्रम?''

दोनों सकपका गए। ''दीदी! वह नहीं जाने की जिद्द कर रही थीं तो भेजना पड़ा। प्रत्येक सप्ताह में उनसे मिलकर आता हूँ। वह वहाँ अपनी आयु के लोगों के साथ प्रसन्न हैं।''

''क्या आपने जानने का प्रयत्न किया कि उनके जाने से श्लोक पर क्या बीता है?''

''श्लोक पर?''

''हाँ श्लोक पर! आपका बच्चा दादी के जाने से इतना आहत है कि हो सकता है कभी वह कोई गलत कदम उठा ले। वह गलत कदम कुछ भी हो सकता है। अभी समय है, घर के हालत ठीक कीजिए।''

''और श्लोक के पिताजी आप? आप क्या कर रहे हैं? जब आप ही अपने माँ-बाप का सम्मान नहीं करेंगे तो आपकी पत्नी क्यों करेगी? पर आज तो अपने माता-पिता ही परिवार का हिस्सा नहीं माने जाते। बच्चे शिशु गृह में रख लेंगे, नौकरों के भरोसे छोड़ देंगे नौकरों के नखरे भी सहलेंगे पर परिवार में माता-पिता का होना तनाव का कारण बनने लगता है।''

श्लोक के माता-पिता को चुप देखकर शिक्षिका को अपनी त्रुटि भी अनुभव हुई- ''क्षमा करो! मुझे लगता है मैं अपनी सीमाएँ भूल गई थी। मैं तो मात्र श्लोक की शिक्षिका हूँ, आपको इतना सब कुछ कहने का मुझे कोई अधिकार नहीं। पर श्लोक एक अच्छा संवेदनशील और होशियार बच्चा है, मेरा प्रिय छात्र भी है उसकी उदासीनता, निराशा, उसका पढ़ाई में पिछड़ना मुझसे देखा नहीं जा रहा था। आगे आपकी इच्छा है।''

''नहीं दीदी! क्षमा तो हमें माँगना चाहिए। आपका बहुत-बहुत आभार अब हम सब ठीक कर लेंगे, एक-दो दिन में माँ को भी घर ले आयेंगे।''

- हैदराबाद (तेलंगाना)

मम्मी ने फौजी भईया के बारे में मोनी से बताया-'वह तुम्हारे बुआ के भाई की सास की बेटी का भतीजा है।' मोनी फौजी भईया के रिश्ते में क्या लगती है?

उत्तर: फौजी भईया मोनी का ममेरा भाई है।

नाचूँ, गाऊँ, शोर मचाऊँ

– श्यामपलट पांडेय

तेज धूप में चलते–चलते
तन–मन जब जलने लगता है
एक बड़ा बादल का टुकड़ा
छाया दे दे, दिल करता है।

आए बड़े जोर की आँधी
पानी के सँग हल्ला मचाती
ढोल बजाती, नाच दिखाती
जी भर भीगूँ, दिल कहता है।

कूद–कूद खेलूँ पानी में
बौछारों के सँग लहराऊँ
अम्मा मुझे खोजती आएँ
मैं छिप जाऊँ, दिल करता है।

नाचूँ–गाऊँ, शोर मचाऊँ
बस अपने में ही खो जाऊँ
कीचड़ में जी भर कर लोटूँ
फिर घर जाऊँ, दिल कहता है।

– अहमदाबाद (गुजरात)

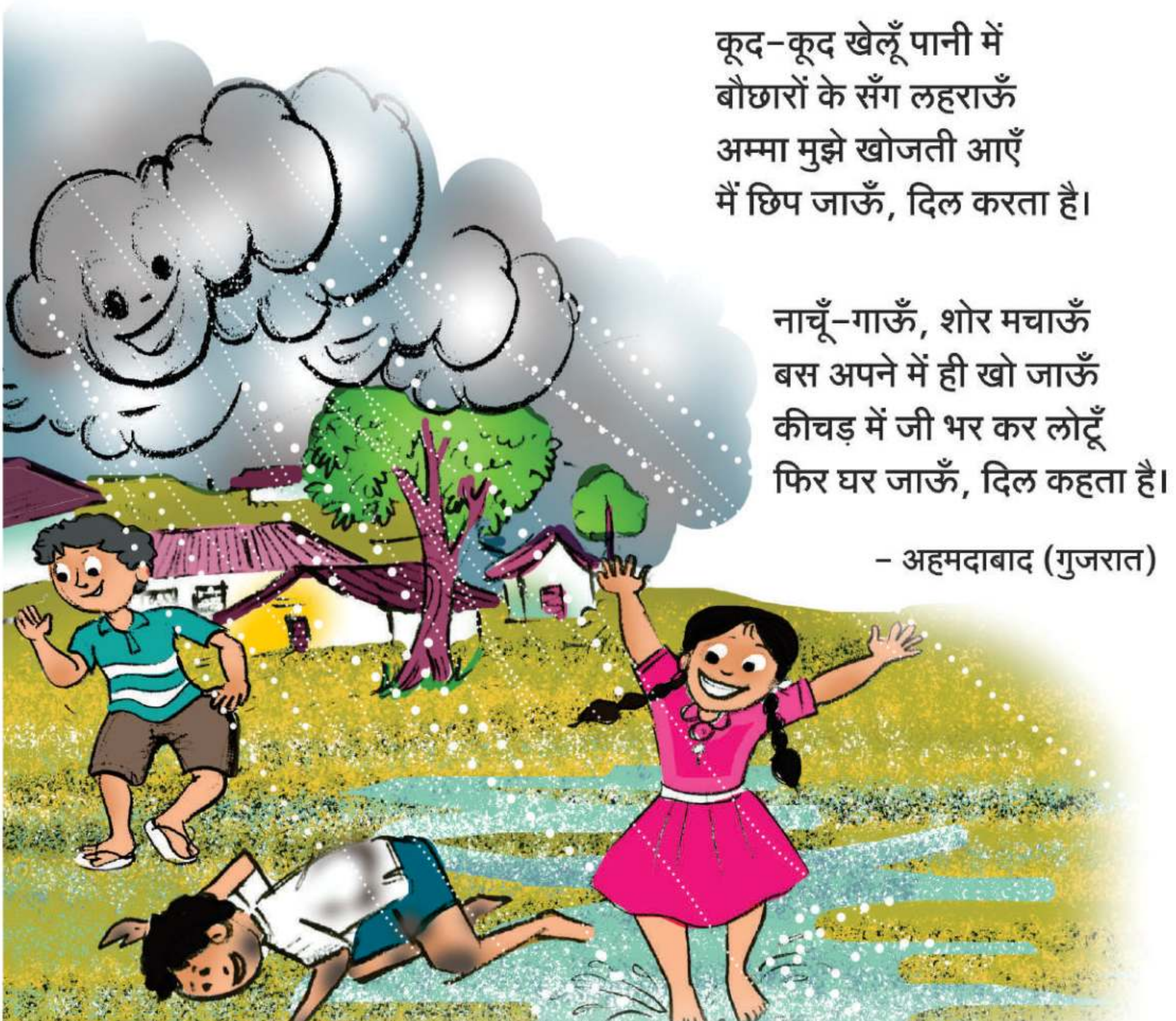

पुस्तक परिचय

रोमांचक बाल विज्ञान कथाएँ

मूल्य १५०/-
प्रकाशक- कश्यप पब्लिकेशन, २२२५ बी -१ बी पूजा पार्क वरल हाउस के पास वाघावाड़ी रोड, भावनगर-३६४००१ (गुजरात)

डॉ. रवीन्द्र अंधारिया गुजराती बाल साहित्य के सशक्त लेखक हैं। यह संकलन उनकी मूल गुजराती में लिखी रोचक विज्ञान कथाओं का हिन्दी अनुवाद है। यह अनुवाद बाल साहित्यकार **श्री. शिवचरण मंत्री** ने किया है। अत्यंत रोचक १३ विज्ञान कथाओं का संकलन विज्ञान बाल साहित्य के लिए एक उपलब्धि है।

पेड़ चलने लगा

मूल्य ६०/-
प्रकाशक- डॉ. हुन्दराज बलवाणी १७२, महारथी सोसायटी, सरदार नगर, अहमदाबाद-३८२४७५ (गुजरात)

डॉ. हुन्दराज बलवाणी बाल साहित्य जगत का एक सुपरिचित नाम है। आपकी कहानियाँ कई भाषाओं में प्रकाशित हुई हैं। प्रस्तुत संग्रह में आपकी १० महत्वपूर्ण बाल कहानियाँ संकलित हैं। सरल भाषा प्रवाहमयी शैली बच्चों में उत्सुकता जगाने वाली है।

फूल और पत्ते

मूल्य १२५/-
प्रकाशक- नमन प्रकाशन ४२३१/१ अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली-११०००२

श्री. अश्वनीकुमार पाठक बाल साहित्य के सिद्ध हस्ताक्षर हैं उनकी लेखनी बच्चों के लिए निरंतर नया रचती रहती है। प्रस्तुत पुस्तक उनकी ४० बाल एवं किशोरों के लिए लिखी सुमधुर एवं विचार प्रधान, प्रेरक कविताओं का संग्रह है। यह उनका उत्कृष्ट रचनाकर्म है।

सुन लो दादू

मूल्य १००/-
प्रकाशक- अविचल प्रकाशन १५ वृन्दा विहार, निकट अमृत आश्रम, ऊँचापुल हल्द्वानी-२६३१३९ (उत्तराखंड)

डॉ. आर.पी. सारस्वत बाल साहित्य के प्रवीण रचनाकार हैं। प्रस्तुत पुस्तक आपका नया बाल कविता संग्रह है। जिसमें २४ सरस कविताओं के माध्यम से आपने संस्कारयुक्त बाल काव्य प्रस्तुत किया है।

छुआ छुअउरी

मूल्य ७२/-
प्रकाशक- उत्पला ग्राफिक्स मो. होली कन्नौज (उ. प्र.)

बालसाहित्य सर्जक **श्री. अनिल द्विवेदी 'तपन'** की ५१ बाल कविता संकलित है। वे बच्चों की सहज बालप्रवृत्तियों के रंग से अपनी रचनाएँ रचते हैं। प्रस्तुत गीत खिलंदड़े बालपन की रोचक झाँकी व मस्ती का चित्र प्रस्तुत करते हैं।

बालमुखी रामायण

मूल्य १२५/-
प्रकाशक- इन्दिरा पब्लिशिंग हाउस ई-५/२१, अरेरा कॉलोनी, पुलिस स्टेशन रोड भोपाल-४६२०१६ (म. प्र.)

यह मात्र ग्यारह वर्ष के बालक **मा. अवि शर्मा** की २५० छन्दों में सम्पूर्ण रामायण की प्रस्तुति है वे एक कलाकार, अभिनेता, मंच संचालक व प्रेरक वक्ता भी है। इस अनूठी बाल प्रतिभा की यह कृति सराहनीय है।

राम की बहिनें

चित्रकथा: देवांशु वत्स

कर्म का महत्व

– डॉ. अशोक

रोहन अपने गाँव से सात किलोमीटर नागर नदी पारकर चार–पाँच मित्रों के साथ प्रतिदिन विद्यालय जाता था। नाविक रामफल सभी बच्चों के मुँहबोले काका बन गये थे। रामफल की यही भरण–पोषण की व्यवस्था थी। इस नाव से विद्यालय के बच्चों और नदी के पार के ग्रामीणों को नदी पार ले जाने और वापस लाने का काम करते थे।

रामफल को जब भी खाली समय मिलता वह सदैव ईश्वर की प्रार्थना में लगे रहते थे। इसलिए शाला आने–जाने वाले बच्चों में शेखर और विनोद–नामक दो बालक प्रायः काका को चिढ़ाते भी थे। परन्तु काका बच्चों की बातों का कभी बुरा नहीं मानते थे।

नागर नदी के यह रामफल काका बहुत प्रसिद्ध हो चुके थे। इसके पीछे के प्रमुख कारणों में रामफल की ईश्वर के प्रति अपार भक्ति थी। वह जब भी यात्रा से मुक्त रहते थे, वे ईश्वर की आराधना में लग जाते थे।

एक दिन रोहन ने अपने साथियों के साथ शाला जाने के लिए काका की नाव में बैठकर उनसे बातचीत करने लगे। रामफल भी रोहन के मित्रों से बात करने में आनंद का अनुभव करते थे।

आज सभी बच्चों को शाला जाने की शीघ्रता थी। वह सब रामफल काका को शीघ्र से शीघ्र अपनी नाव से नदी पार अपनी शाला पहुँचाने का हठ करने लगे। रामफल दो चार यात्रियों की बाट जोह रहे थे। ताकि कुछ आमदनी ठीक–ठाक हो सके।

यात्रियों की आस में वह अपनी नाव में ही बैठकर ईश्वर की आराधना करने लगे। यह सब नाव में बैठे यात्रियों को और विशेषकर रोहन के मित्र विनोद को अच्छा नहीं लग रहा था। वह रामफल काका के पूजा–पाठ का उपहास करके खूब आनन्द ले रहा था। इधर रोहन भी शीघ्र शाला पहुँचना चाहता था।

थोड़ी देर के बाद दो यात्री के आने पर रामफल अपनी नाव को लेकर चलने लगे।

जड़ नाव बीच नदी में पहुँच गई तब मौसम खराब होने लगा। आसमान में घने बादल घिरने लगे थे। सभी बच्चों में डर समा गया था। रोहन का तो डर से बुरा हाल था। यही हाल और यात्रियों का भी था। सभी ईश्वर की प्रार्थना में लग गए।

जब बादल गरजने लगे तो सच में डर समा गया क्योंकि नाव में बैठे विनोद को छोड़कर कोई तैरना नहीं जानता था। नाव डगमगाने लगी थी, परन्तु नाविक रामफल केवल नाव को संभालने में लगातार लगा रहा। सभी लोग नाव में बैठकर ईश्वर की प्रार्थना करने लगे। सबने रामफल को प्रार्थना में शामिल होने के लिए बुलाया परन्तु रामफल अपनी नाव को ही आँधी से बचाने के काम में लगे रहे। सभी बच्चे और यात्री समझ नहीं पा रहे थे कि जो व्यक्ति पूजा–पाठ और ईश्वर की सदैव प्रार्थना करते रहते हैं वह इस विपत्ति में भला प्रार्थना क्यों नहीं कर रहे है? वह हम लोगों की प्रार्थना में क्यों भाग नहीं ले रहे हैं?

सभी बच्चे और यात्री मिलकर एक साथ प्रार्थना करने लगे।

तभी विनोद ने चुटकी लेते हुए कहा– ''क्या काका! आप तो पूजा–पाठ खूब करते थे और अब जब इसकी अधिक आवश्यकता है तो आप अलग–थलग होकर यह क्या कर रहे थे?''

रामफल कुछ नहीं बोले।

सभी यात्री रामफल को बुरा–भला कहने लगे। परन्तु वे कभी नाव की बाँह को देखते और कभी पतवार को।

कभी नाव में बाँधी गई रस्सी को बाँधते और कभी नाव के संतुलन के लिए उपाय करने में लगे रहे।

थोड़ी देर में आसमान साफ होने लगा। और फिर धीरे–धीरे नदी के पानी के साथ ही साथ आँधी–तूफान भी गायब हो गया।

रामफल ने सभी बच्चों और यात्रियों को शाला पहुँचाने नाव को धीरे–धीरे चलाने लगे।

धीरे–धीरे नदी के जल को शांत होने पर बच्चों ने पूछा कि– ''क्या काका! आप तो बहुत प्रार्थना करते हैं। आपका तो ईश्वर पर पूरा विश्वास है तो फिर आज इस विपत्ति में हम लोगों के साथ आपने प्रार्थना क्यों नहीं की?''

रामफल इस प्रश्न के लिए तैयार नहीं थे। फिर भी रामफल काका ने बच्चों को समझाते हुए कहा– ''प्रार्थना शांत वातावरण में शांत मन से करना चाहिए। और जब विपत्ति आये तो हमें अपने कर्म पर ध्यान देना चाहिए। देखा नहीं, कितनी विपत्ति थी? आसमान में काले घने बादल थे। वर्षा होने की आशंका दिख रही थी। हवा भी जोर से बह रही थी। उस समय मुझे अपनी नाव को डूबने से बचाना अधिक आवश्यक था ताकि आप लोगों को आपकी शाला तक सुरक्षित पहुँचा सकूँ। यदि मैं भी आप लोगों के साथ प्रार्थना करने लगता तो आप लोग ही बताओ, फिर कौन नाव को सुरक्षित बचाता? समझे आप लोग? हमें विपत्ति में अपने कर्म करने चाहिए और फिर सफलता के बाद ईश्वर को धन्यवाद देने के लिए प्रार्थना करना चाहिए।''

तब सभी यात्रियों के सामने बड़े ही प्यार से रामफल काका ने कहा– ''बच्चो! पूजा–अर्चना शान्त वातावरण में की जाती है। जब विपरीत स्थिति हो तो कर्म करने की आवश्यकता होती है, न कि ईश्वर की प्रार्थना की।''

''यदि मैं भी आप लोगों के साथ प्रार्थना करने लगता तो नाव की रक्षा कौन करता?''

''प्रार्थना करना अच्छी बात है और मैं तो प्रतिदिन खाली समय में ईश्वर की प्रार्थना करता भी हूँ। परन्तु कठिन परिस्थिति में कर्म अधिक आवश्यक है।''

यह सुनकर बच्चे बहुत प्रसन्न हुए। सभी नाविक रामफल काका की जय–जयकार करने लगे। विनोद जो प्राय: रामफल काका को तंग करता था वह अपने सिर को झुकाकर काका की बातें सुनकर बड़ा लज्जित अनुभव कर रहा था। आज उसे भी एक सीख मिल गई थी।

– पटना (बिहार)

दाऊ और कन्हैया

– शिवचरण चौहान

खेल–खेल में रार कर रहे– दाऊ और कन्हैया।
बिना बात तकरार कर रहे– दाऊ और कन्हैया।।
गोरे नन्द, यशोदा गोरी– मैं भी तो हूँ गोरा।
काला तू, आ गया कहाँ से– किसी ओर का छोरा।
जोर–जोर से शोरकर रहे– दाऊ और कन्हैया।।
श्रीदामा मनसुखा कह रहे– कहे यशोदा मैया।
तुमको नंद, मोल का लाए गायों का चरवैया।
लीला रोज हजार कर रहे दाऊ और कन्हैया।।
सच–सच मैं कह रही यशोदा मैं हूँ तेरी मैया।
झूठा, बड़ा लबार–छिछोरा तेरा यह बल भैया।
आपस में फिर प्यार कर रहे दाऊ और कन्हैया।।

– कानपुर (उ. प्र.)

पत्ते की आत्मकथा

– हिति चौधरी

मेरा नाम **पल्लव** है। मैं जब तक पेड़ की शाखा से ही लगा हुआ था, मैं बहुत सुंदर, कोमल और हरा–भरा था। मुझे बहुत अच्छा लगता था। मैं पेड़ के दूसरे पत्तों के साथ खूब खेलता, नाचता और झूला–झूलता था। जो राहगीर थककर मेरे पेड़ के नीचे आराम करते थे, मैं अपने साथियों के साथ उन्हें ठंडी हवा करता था, और यदि मेरे पास फल हैं तो वह भी खाने के लिए मैं उन्हें देता था।

धीरे–धीरे मैं **पत्ता** पीला और कमजोर होने लगा तो मैं बहुत उदास हो गया। मुझे लगने लगा कि अब मुझ **पर्ण** को अपने पेड़ रूपी घर से बिछुड़ना पड़ेगा। मुझे बहुत दु:ख हुआ। एक दिन आया जब मुझे भरोसा हो गया कि अब मेरे जीवन का अंत आ गया है। मुझे जाना ही पड़ेगा। मैं शाखा से टूटकर धरती पर गिर गया और अपने **पान** साथियों से बिछुड़कर मर गया।

मैंने सोचा कि मैं **पात** मरकर भी अपने को सार्थक करूँगा और लोगों के बगीचे में खाद बनकर रहूँगा। उन्हें सुंदर–सुंदर फूल और मीठे–मीठे फल देकर उनकी सेवा करूँगा और खुश रहूँगा।

यही मेरी आत्मकथा है जो कभी समाप्त नहीं होगी मैं खाद बनकर पेड़ों में फिर घुलमिल जाऊँगा नया रूप नया आकार नया जन्म पर मेरी **पतिया** आत्मा तो वही रहेगी न?

– नवी मुंबई (महाराष्ट्र)

कविता

इसलिए शपथ लो तुम

– पं. नन्दकिशोर 'निर्झर'

लाठी खाई गोली खाई,
हिस्से हथकड़ियाँ भी आई,
कितने अरमान निछावर कर
हमने स्वतन्त्रता फिर पाई।।
सिंदूर मिटे, राखी रोई,
माँ की गोदी में आग लगी।
यह तभी हमें मिल पाई है–
भारत भू में जब क्राँति जगी।।
कितनों ने बचपन बलि किया,
कितनों ने भरी जवानी दी।
कितनों ने अपने लाल दिये–
कितनों ने निज कुर्बानी दी।।
इसलिए शपथ लो तुम मन में,
इसके रक्षण आराधन में।
अपना सर्वस्व लूटा दोगे–
और जगे रहोगे जीवन में।।
तब तो यह दिन फिर आएगा।
आया है आता ही जाएगा।
बलिदान व त्याग शहीदों का
तब व्यर्थ न जाने पाएगा।।

– चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३
आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०७/२०२१
प्रेषण तिथि ३०/०७/२०२१
प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है
संस्कार फैलाना और अच्छी बात।

वार्षिक शुल्क
180/-

आजीवन शुल्क
1400/-

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : **www.devputra.com**

देवपुत्र अब ***Jio Net*** पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना